Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवाद: तू कह दे हे मेरे अल्लाह! सलतनत के मालिक! जू जिसे चाहे शासन प्रदान करे और जिस से चाहे छीन लेता है। और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है। भलाई तेरे ही हाथ में है

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 14

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

27 रजब 1440 हिजरी कमरी 4 शहादत 1397 हिजरी शमसी 4 अप्रैल 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सफलता इस्तिक़ामत पर आधारित होती है और वह अल्लाह को पहचानना और किसी परीक्षा और इम्तिहान से न डरना है। ज़रूर इस का परिणाम यह होगा कि वह अल्लाह तआला से वार्तालाप में नबियों की तरह होगा।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इस्तिक़ामत

यह जो फरमाया وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अलअन्कबूत 70) अर्थात हमारी राह में कोशिश करने वाले रास्ता पाऐंगे. इस के अर्थ यह हैं कि इस रास्ता में पैग़म्बर के साथ मिल कर कोशिश करनी होगी। एक दो घन्टा के बाद भाग जाना मुजाहिद का काम नहीं बल्कि जान देने के लिए तैय्यार रहना उस का काम है। अत: मुत्तकी की निशानी इस्तिक़ामत है जैसे कि फरमाया اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا (हामीम सिज्दा 31) अर्थात जिन्होंने कहा कि रब्ब हमारा अल्लाह है और दृढ़ता दिखाई और हर तरफ से मुंह फैर कर अल्लाह का ढूंढा। अर्थात यह कि सफलता दृढ़ता पर आधारित है और वह अल्लाह को पहचानना और किसी परीक्षा से न डरना है। ज़रूर इस का यह परिणाम निकलेगा कि वह अल्लाह तआला के बात करने में निबयों की तरह होगा।

वली बनने के लिए परीक्षा ज़रूरी है

बहुत से लोग यहां आते हैं और चाहते हैं कि फूंक मार कर अर्श पर पहुंच जाएं। और वासलीन (अल्लाह को प्राप्त करने वाले) हो जाएं। इस तरह के लोग ठट्ठा करते हैं। वे निबयों की अवस्था को देखें। यह भूल है जो कहता है कि किसी वली के पास जाकर सैंकड़ों वली उसी क्षण बन गए। अल्लाह तआला तो फरमाता है اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ (अलअन्कबूत 70) जब तक इन्सान परीक्षा में न डाला जाए वह कब वली बन सकता है।

एक मजलिस में बायज़ीद रहमहुल्लाह वाज़ कर रहे थे। वहां एक मशाइख़ का बेटा भी था ,जो एक लंबा सिलसिला रखता था। उस को आप से अंदरूनी वैर था। अल्लाह ताला का यह गुण है कि पुराने ख़ानदानों को छोड़कर किसी अन्य को ले लेता है। जैसे बनी इस्राईल को छोड़कर बनी इस्माईल को ले लिया। क्योंकि वे लोग भोग विलास में पड़ कर ख़ुदा को भूल गए होते हैं। وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ (आले इम्रान 141) अत: इस शेख़ के बेटे को ख़्याल आया कि यह एक मामूली ख़ानदान का आदमी है। कहाँ से ऐसा साहब-ए-ख़वारिक़ (चमत्कार दिखाने वाला) आ गया कि लोग उस की तरफ़ झुकते हैं और हमारी तरफ़ नहीं आते। ये बातें ख़ुदा ताला ने हज़रत बायज़ीद रहमहुल्लाह पर ज़ाहिर कीं ,तो इन्होंने क़िस्सा के रंग में यह वर्णन करना शुरू किया कि एक जगह मज्लिस में रात के वक़्त एक लंप में पानी से मिला हुआ तेल जल रहा था। तेल और पानी में बहस हुई। पानी ने तेल को कहा कि तो गाढ़ा और गंदा है और बावजूद गाढ़ा होने मेरे ऊपर आता है। में एक साफ चीज़ हूँ और पवित्रता के लिए इस्तिमाल किया जाता हूँ लेकिन नीचे हूँ ,उस का कारण किया है? तेल ने कहा कि जितनी परेशानियां मैंने सहन की हैं, तूने वे कहाँ झेली हैं जिसके कारण यह बुलंदी मुझे नसीब हुई। एक ज़माना था, जब मैं बोया गया ,ज़मीन में छुपा रहा, विनीत हुआ फिर ख़ुदा के इरादा से बढ़ा। बढ़ने ना पाया कि काटा गया। फिर तरह तरह की मशक़्क़तों के बाद साफ़ किया गया। कोल्हू में पीसा गया। फिर तेल बना और आग लगाई गई। क्या इन कुठिनाइयों के बाद भी बुलंदी हासिल ना करता?

यह एक उदाहरण है कि अल्लाह वाले कठिनाइयों के बाद सम्मान पाते हैं। लोगों का यह ग़लत ख़्याल है कि अमुक आदमी अमुक के पास जाकर बिना कोशिशों के तथा पवित्र हुए बिना एक क्षण में सिद्दीक़ीन में दाख़िल हो गया। क़ुरआन शरीफ़ को देखो कि ख़ुदा किस तरह तुम पर राज़ी हो। जब तक नबियों की तरह तुम पर मसीबतें परेशानियां ना आएं, जिन्होंने कई बार तंग आकर यह कह दिया حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ (अल्बकरह: 215) अल्लाह के बन्दे हमेशा बलाओं में डाले गए फिर ख़ुदा ने उन को स्वीकार किया।

तरक्की की दो राहें

सुलूक

सूफियों ने तरक्की की दो राहें लिखी हैं। एक सुलूक दूसरा जज़ब सुलूक वह है जो आप लोग अक्लमन्दी से सोच कर अल्लाह तथा रसूल का मार्ग धारण करते हैं। जैसे फरमाया قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ (आले इम्रान 32) अर्थात अगर तुम अल्लाह के प्यारे बनना चाहते हो, तो रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी करो। वह हादी कामिल वही रसूल हैं जिन्होंने वे कष्ट उठाए कि दुनिया अपने अंदर इस की कोई तुलना नहीं रखती। एक दिन भी आराम ना पाया। अब पैरवी करने वाले भी हक़ीक़ी रूप से वही होंगे जो अपने मतबू (जिस का अनुकरण किया जाए) के हर कथन तथा कर्म की पैरवी पूरी कोशिश से करें। अनुकरण करने वाले वही है जो सब तरह पैरवी करे। आसानी चाहने वाले और सख़्त गुज़ार को अल्लाह तआला पसंद नहीं करता, बल्कि वह तो अल्लाह ताला के ग़ज़ब में आएगा। यहां जो अल्लाह तआला ने रसूले अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी का हुक्म दिया तो सालिक का काम यह होना चाहिए कि अव्वल रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुकम्मल तारीख़ देखे और फिर पैरवी करे। इसी का नाम सुलूक है। इस राह में बहुत मुसीबतें तथा परेशानियां होती हैं इन सब को उठाने के बाद ही इन्सान सालिक होता है।

जज़ब

अहले जज़ब का दर्जा सालिकों से बढ़ा हुआ है। अल्लाह तआला उन्हें सुलूक के दर्जा पर ही नहीं रखता, बल्कि ख़ुद उन को मुसीबतों में डालता और ज़ाज़िब अज़ली से अपनी तरफ़ खींचता है। सारे नबी मजज़ूब ही थे। जिस वक़्त इन्सानी रूह को मसीबतों का मुक़ाबला होता है उनसे अनुभव प्राप्त कर के और तजुर्बा पा कर रूह चमक उठती है। जैसे कि लोहा या शीशा यद्यपि चमक का माद्दा अपने अंदर रखता है लेकिन रगड़ाई के बाद ही चमकदार होता है यहां तक कि इस में मुँह देखने वाले का मुँह नज़र आ जाता है। मुजाहिदात भी सैक़ल (रगड़ाई) का ही

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

रसूलुल्लाह मेरा जो कुछ है वह सब ज़ूर का है और अल्लाह की क़सम ! जो चीज़ आप मुझ से क़बूल फ़र्मा लेते हैं वह मुझे उस चीज़ की तुलना में ज़्यादा ख़ुशी पहुंचाती है जो मेरे पास रहती है ।

इताअत और इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मूर्ति बदरी अस्हाब-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

हज़रत ख़ालिद बिन क़यस , हज़रत हारिस बिन ख़ज़मह, हज़रत ख़ुनैयस बिन हुज़ाफ़ह हज़रत हारसा बिन नुअमान, हज़रत बशीर बिन सअद रज़ी अल्लाहो अनहुम वरज़ूवा अनहु की मुबारक सीरत का दिलनशीन वर्णन।

कुर्आन करीम की शिक्षा के मुताबिक़ हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह के इर्शादात की रोशनी में हिबा और विरासत में फ़र्क़ और इस की हिक्मत का वर्णन।

ये हुक्म छोटी छोटी चीज़ों के मुताल्लिक़ नहीं है बल्कि बड़ी बड़ी चीज़ों के बारे में है जिन में इमतियाज़ी सुलूक करने से आपस में बुग़ज़ और शत्रुता पैदा होनी की संभावना हो सकती है।

वसीयत और हिबा जो कि अपनी औलाद के लिए नहीं होता बल्कि धर्म के लिए होता है जायज़ है।

सक़ीफ़ा बनू साइदा में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह के इंतिख़ाब-ए-ख़िलाफ़त की घटना का संक्षिप्त वर्णन। इस सारी कार्रवाई से ये अंदाज़ा होता है कि अंसार तथा मुहाजिरीन सब इस्लाम के लाभ के बारे में ही सोचते थे।

बंग्लादेश में बुराई को पसन्द करने वाले मुख़ालिफ़ीन की तरफ़ से अहमदियों के घरों,दुकानों पर हमला और दुआ की विशेष तहरीक।

ख़िलाफ़त से अक़ीदत का सम्बन्ध रखने वाली, नमाज तथा रोज़ा की पाबंद, दुआ करने वाली, विनम्र मिज़ाज औरत मुकर्रमा सिद्दीक़ा बेगम साहिबा आफ़ दुनियापूर की वफ़ात पर उनका ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 15 फरवरी 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन सहाबा का ज़िक्र है उनमें से पहला नाम है हज़रत ख़ालिद बिन क़ैस का। हज़रत ख़ालिद का सम्बन्ध क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू बयाज़ह से था। आप के पिता क़ैस बिन मालिक थे और माता का नाम सलमा बिंत हारिसा था। आपकी अहलिया उम्म-ए-रबीआ थीं जिन से एक बेटे अबदुर्रहमान थे। इब्ने इसहाक़ के नज़दीक आप सत्तर अंसार सहाबा के साथ बैअत उक़बा में शरीक हुए। हज़रत ख़ालद रज़ि ने जंगे बदर और उहद में शिरकत की थी।

(अत्तबकातुल कुब्रा, जिल्द 3,पृष्ठ 449 से 450, ख़ालिद बिन क़ैस रज़ि, प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

दूसरे सहाबी हैं हज़रत हारिस बिन ख़ज़मह। यह अंसारी थे। उनकी कुनिय्यत अबू बिशर थी। उनका सम्बन्ध अंसार के क़बीला ख़ज़रज से था। बनू अब्दल अशहल के हलीफ़ थे। हज़रत हारिस बिन ख़ज़मह जंगे बदर, उहद, ख़ंदक़ और अन्य सारी जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हारिस बिन ख़ज़मह और हज़रत अयास बिन बुकयर के मध्य भाईचारा स्थापित फ़रमाया था। तारीख़ में यह ज़िक्र आता है कि जंग-ए-तबूक के मौक़ा पर जब आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऊंटनी गुम हो गई तो मुनाफ़िक़ों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर यह एतराज़ किया कि आप को अपनी ऊंटनी की तो ख़बर नहीं है तो आसमान की ख़बरें कैसे जान सकते हैं। जब आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस बात की ख़बर हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं वही बातें जानता हूँ जिनके बारे में ख़ुदा मुझे ख़बर देता है और फिर फ़रमाया कि अब ख़ुदा ने मुझे ऊंटनी के बारे में ख़बर दी है कि वह वादी की अमुक घाटी में है। इस का ज़िक्र पहले भी एक सहाबी के ज़िक्र में कुछ हो चुका है तो जो सहाबी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बताए हुए स्थान से ऊंटनी तलाश कर के लाए वह हज़रत हारिस बिन ख़ज़मह थे। उनकी वफ़ात 40 हिज्री में हज़रत अली रज़ि के दौरे ख़िलाफ़त में 67 साल की उम्र में मदीना में हुई।

(असदूल ग़ाबः, जिल्द 1,पृष्ठ 602 से 603, अल्हारिस बिन ख़ज़महा, प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई) (इसाबा , जिल्द 1,पृष्ठ 666 ,अल्हारिस बिन ख़ज़महा, प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1995 ई)

अगले सहाबी हैं जिनका ज़िक्र होगा हज़रत ख़ुनयस बिन हुज़ैफ़ह। उनकी कुनिय्यत अब्बू हुज़ैफ़ह थी। हज़रत ख़ुनयस की माता का नाम ज़ईफ़ह बिंत-ए-हिज़यम थी। उनका सम्बन्ध बनी सहम बिन अमरो से था। यह एक क़बीला था। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दार-ए-अर्क़म में जाने से पहले इस्लाम क़बूल किया था। हज़रत ख़ुनयस हज़रत अबदुल्लाह बिन हुज़ैफ़ह के भाई थे। हज़रत ख़ुनयस उन मुसलमानों में शामिल थे जिन्होंने दूसरी बार हब्शा की तरफ़ हिज्रत की। हज़रत ख़ुनयस का शुमार अव्वलीन मुहाजरीन में होता है। जब हज़रत ख़ुनयस ने मदीना हिज्रत की तो हज़रत रिफ़ाअ बिन अबदे अल्मुनज़िर के पास रहे। आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़ुनयस और अब्बू अबस बिन जबर के मध्य भाईचारा स्थापित किया। हज़रत ख़ुनयस जंगे बदर में शामिल हुए। उम्मुल-मोमिनीन हज़रत हफ़सा आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले हज़रत ख़ुनयस के अक़द में थीं। उनकी शादी हुई थी।

(अत्तबक़ातुल कुबरा ,जिल्द 3,पृष्ठ 300, ख़नीस बिन हुज़ैफ़अ, प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) (असदुल ग़ाबः , जिल्द 2,पृष्ठ 188, ख़नीस बिन हुज़ैफ़अ, प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

सीरत ख़ात्मुन्नबिय्यीम में इस के विस्तार में लिखा है कि: हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब

की एक साहिबज़ादी थीं जिनका नाम हफ़स: था। वह ख़ुनैस बिन हुज़ैफ़ह की शादी में थीं जो एक मुख़लिस सहाबी थे और जंग बदर में शरीक हुए थे। बदर के बाद मदीना वापिस आने पर ख़ुनयैस बीमार हो गए और इस बीमारी से बच ना हो सके और उनकी वफ़ात हो गई। हज़रत उमर रज़ि को हज़रत हफ़स: रज़ि के दूसरे निकाह की बड़ी फ़िक्र थी। उस वक़्त हज़रत हफ़सा की उम्र बीस साल से ऊपर थी। कुछ अरसा बाद हज़रत उमर रज़ि ने अपनी फ़ित्रती सादगी मैं ख़ुद उसमान बिन अफ़्फान से मिलकर ज़िक्र किया कि मेरी लड़की हफ़सा विधवा है। आप अगर पसंद करें तो उस के साथ शादी कर लें मगर हज़रत उसमान ने टाल दिया। इस के बाद हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत अबू बकर रिज़ से शादी का ज़िक्र किया कि आप रज़ि इस से शादी कर लें लेकिन हज़रत अबूबकर ने भी ख़ामोशी इख़तियार की। कोई जवाब नहीं दिया। इस पर हज़रत उमर रज़ि को बहुत दुख हुआ, रंज हुआ। उन्होंने इसी दुख की हालत में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर आप से यह सारी बातें वर्णन की, अर्ज़ की। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उम्र ! कुछ फ़िक्र ना करो। ख़ुदा को मंज़ूर हुआ तो हफ़स: को उसमान रिज़ और अबू बकर रिज़ की निसबत बेहतर पति मिल जाएगा और उसमान को हफ़सा की निसबत बेहतर बीवी मिलेगी। यह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस लिए फ़रमाया कि आप हफ़सा के साथ शादी कर लेने और अपनी लड़की उम्मे कुलसूम को हज़रत असमान रज़ि के साथ ब्याह कर देने का इरादा कर चुके थे जिस से हज़रत अबू बकर रिज़ और हज़रत उसमान रज़ि दोनों को सूचना थी। उनको बतला दिया था और इसी लिए उन्होंने हज़रत उमर रज़ि के परामर्श को टाल दिया था। इस के कुछ समय बाद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसमान से अपनी साहिबज़ादी उम्मे कुलसूम की शादी फ़र्मा दी जिसका ज़िक्र गुज़र चुका है और इस के बाद आप ने ख़ुद अपनी तरफ़ से हज़रत उमर रज़ि को हफ़स: के लिए पैग़ाम भेजा। हज़रत उमर रज़ि को इस से बढ़कर और क्या चाहिए था। उन्होंने निहायत ख़ुशी से इस रिश्ता को क़बूल किया और शाबान 3 हिज्री में हज़रत हफ़स: आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकाह में आकर हर्म नबवी में दाख़िल हो गईं।

जब यह रिश्ता हो गया तो हज़रत अबूबकर रज़ि ने हज़रत उमर रज़ि से कहा कि शायद आपके दिल में मेरी तरफ़ से कोई मलाल हुआ हो, दिल में मैल पैदा हुआ हो, दुख हुआ हो। बात यह है कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरादे से सूचना थी लेकिन मैं आपकी इजाज़त के बिना अर्थात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इजाज़त के बिना आप के राज़ को ज़ाहिर नहीं कर सकता था। हाँ आप का अगर यह अर्थात इस रिश्ता का आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरादा ना होता तो मैं बड़ी ख़ुशी से हफ़सा से शादी कर लेता।

हफ़सह रज़ि के निकाह में एक तो यह ख़ास मस्लिहत थी कि वह हज़रत उमर रज़ि की साहिबज़ादी थीं जो मानो हज़रत अबूबकर रज़ि के बाद सारे सहाबा में सब से उत्तम समझे जाते थे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़र्रबीन ख़ास में से थे। अत: आपस के सम्बन्धों को ज़्यादा मज़बूत करने और हज़रत उमर रज़ि और हफ़सह रज़ि के इस सदमा की तलाफ़ी करने के लिए जो ख़ुनयुस बिन हुज़ैफ: की असमय मौत से उनको पहुंचा था आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुनासिब समझा कि हफ़स: रज़ि से ख़ुद शादी फ़र्मा लें।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए, पृष्ठ 477 से 478)

एक रिवायत के अनुसार हज़रत ख़ुनैस बिन हुज़ैफ: को जंग-ए-उहद में कुछ ज़ख़्म आए। बाद में इन्ही ज़ख़्मों की वजह से आप रज़ि की मदीना में वफ़ात हुई। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ि की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और आप रज़ि को जन्नतुलबक़ी में हज़रत उसमान बिन मज़ाऊन के पहलू में दफ़न किया गया। (इस्तियाब, जिल्द 2,पृष्ठ 452, ख़नीस बिन हज़ाफ़:, प्रकाशन दारु जैल बैरूत 1992 ई)(अत्तबकातुल कुब्रा, जिल्द 3,पृष्ठ 300 ,ख़नैस बिन हुज़ाफ़:, प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

अगले सहाबी जिनका ज़िक्र है उनका नाम हज़रत हारिस बिन नुअमान है। उनकी कुनिय्यत अबू अब्दुल्लाह थी। हज़रत हारिस बिन नुअमान अंसारी सहाबी थे। उनका सम्बन्ध क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू नज्जार से था। आप रज़ि जंगे बदर, उहद, ख़ंदक़ और अन्य सारी जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल थे। उनका शुमार बड़े जलील-उल-क़दर सहाबा में होता है। हज़रत हारस: की माता का नाम जअ्दह बिन्त-ए-उबैद था। हज़रत हारिस बिन नुअमान की औलाद में अब्दुल्लाह, अबदुर्रहमान, सौदह, उमरह् और उम्मे हिश्शाम शामिल हैं। इन बच्चों की माता का नाम एम ख़ालिद था। आपकी अन्य औलाद में उम्मे कुलसूम जिनकी माता बनू अब्दिल्लाह बिन ग़तफ़ान में से थी और अमतुल्लाह उनकी माता जुन्दअ में से थीं।

एक दूसरी रिवायत है इस में आता है कि हज़रत इब्न अब्बास वर्णन करते हैं कि यह हज़रत हारस: बिन नुअमान आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास से गुज़रे। आपके पास जिब्राईल अलैहिस्सलाम बैठे थे। एक और रिवायत पहले थी वो रिवायत मुख़्तसर सी इस तरह थी कि आप रज़ि गुज़रे तो आप ने सलाम किया और जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने वाअलैकुम अस्सलाम कहा लेकिन जो विस्तार से रिवायत है वह यह है कि हज़रत इब्न अब्बास रज़ि वर्णन करते हैं कि हज़रत हारस: बन नुअमान आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास से गुज़रे। आप के पास हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम बैठे थे और आप उनसे आहिस्ता-आहिस्ता कुछ बातें कर रहे थे। हारस: ने आप को सलाम नहीं किया। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा कि उन्होंने सलाम क्यों नहीं किया? तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बाद में हारस: से पूछा कि जब तुम गुज़र रहे थे तो तुम ने सलाम क्यों नहीं किया था? उन्होंने अर्ज़ किया कि मैंने आप के पास एक शख़्स को देखा था। आप उनसे आहिस्ता-आहिस्ता कुछ बातें कर रहे थे। मैंने नापसंद किया कि मैं आप की बात को काटूं अर्थात सलाम कर के फिर आप के ध्यान को फेरों। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि क्या तुम ने उस शख़्स को देख लिया था जो मेरे पास बैठा था? उन्होंने कहा। जी हाँ। तो आप ने फरमाया कि वह जिब्रईल थे और वह कहते थे कि अगर ये शख़्स सलाम करता तो मैं इस शख़्स को जवाब देता। फिर उस के बाद जिब्राईल ने कहा कि यह उन अस्सी लोगों में से हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैंने जिब्राईल से पूछा कि इस के क्या अर्थ हैं? जिस पर जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा कि ये उन अस्सी आदमियों में से हैं जो जंगे हुनैन में आपके साथ साबित-क़दम रहे थे। उनका रिज़्क़ और उनकी औलाद का रिज़्क़ जन्नत में अल्लाह तआला के ज़िम्मा है। अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हारसह रज़ि से यह सब कुछ वर्णन किया।

हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह तआला अन्हा वर्णन करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनकी बड़ी इज़्ज़त और सम्मान करते थे और उनके बारे में यह भी रिवायत में है, हज़रत आयशा ने कहा है कि अपनी माता के साथ बेहतरीन सुलूक किया करते थे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इस तरह की नेकी तुम सबको करनी चाहिए।

हज़रत हारस: बन नुअ्मान आख़िरी उम्र में अन्धे हो गए थे। नज़र ख़राब हो गई। बंद हो गई थी। आप रज़ि ने एक रस्सी अपनी नमाज़ की जगह से अपने कमरे के दरवाज़े तक बाँधी थी और अपने पास एक टोकरी रखा करते थे जिस में खजूरें होती थीं। जब कोई मिस्कीन आप के पास आता, कोई मांगने वाले आता और सलाम करता या मिलने वाला आता या समझते कि यह ग़रीब आदमी है तो इस रस्सी को पकड़ कर अपनी नमाज़ की जगह से दरवाज़े तक आते और उनको खजूरें देते। आप के घर वाले कहते थे कि हम आप की तरफ़ से यह ख़िदमत कर दिया करें, हम दे देते हैं। आप की नज़र ठीक नहीं। क्यों तकलीफ़ करते हैं? मगर आप फ़रमाया करते थे कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि मिस्कीन की मदद करना बुरी मौत से बचाता है। रिवायत में है कि हज़रत हारस: बन नुअ्मान के मकान मदीना में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मकानों के क़रीब थे, काफ़ी मकान थे, जायदाद थी और ज़रूरत के अनुसार हज़रत हारस: आपने मकान आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में प्रस्तुत कर दिया करते थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा,जिल्द 3, पृष्ठ 371 से 372,हारस: बिन नुअमान, प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) (असदुल ग़ाब:, जिल्द 1,पृष्ठ 655 से 656 हारस: बिन अल्नुअमान, प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई) अर्थात स्थायी या शादियों की अवस्था में या और किसी ज़रूरत के समय, जब भी रिहायश की ज़रूरत होती थी दे दिए बल्कि स्थायी देते थे।

जब हज़रत अली रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की हज़रत फातिमा रज़ि से शादी हुई तो आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ि से फ़रमाया कि अपने लिए कोई अलग घर तलाश कर लो। हज़रत अली रज़ि ने घर तलाश किया और वहीं हज़रत फातिमा रज़ि को ब्याह कर ले गए। फिर आं हुज़ूर ने हज़रत फातिमा रज़ि से कहा कि मैं तुम्हें अपने पास बुलाना चाहता हूँ अर्थात मेरे क़रीब आ जाओ। घर ले लू। हज़रत फातिमा रज़ि ने आप को मश्वरा दिया, आँ हज़रत की

ख़िदमत में अर्ज़ की कि आप हारस: बन नुअमान से फ़रमाएं कि वे कहीं और चले जाएं और ये जो घर उनका है वह हमें दे दें। आं हुज़ूर ने फ़रमाया कि हारसह रज़ि हमारे लिए कई बार जा चुके हैं। इन के घर क़रीब हैं वह जो भी क़रीबी घर होता है वह छोड़ के मुझे दे देते हैं। अब मुझे शर्म आती है कि इस से दुबारा मुंतक़िल होने का कहूं। यह ख़बर हज़रत हारिस: रज़ि को पहुंची और आप घर ख़ाली कर के वहां से दूसरी जगह चले गए और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आकर अर्ज़ की कि हे रसूलुल्लाह! मुझे मालूम हुआ है कि आप हज़रत फातिमा रज़ि को अपने पास मुंतक़िल करना चाहते हैं। यह मेरे घर हैं और यह बनू नज्जार के घरों में आप से सबसे ज़्यादा क़रीब हैं और में और मेरा माल अल्लाह और इस के रसूल ही के लिए हैं। हे रसूलुल्लाह! आप मुझ से जो माल चाहें ले लें वे मुझे इस माल से बहुत ज़्यादा प्यारा होगा जिसे आप छोड़ देंगे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस पर फ़रमाया तुम ने सच कहा। ख़ुदा तआला तुम पर बरकत नाज़िल फ़रमाए। अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा को हज़रत हारसह रज़ि वाले घर में बुला लिया।

(अत्तबकातुल कुब्रा ,जिल्द 8,पृष्ठ 18 से 19 ,फ़ातम रज़ि बिंत रसूल ,प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

उसका कुछ विस्तार सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने भी वर्णन फ़रमाई है इस तरह कि आप लिखते हैं कि हज़रत अली रज़ि अब तक शायद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मस्जिद के किसी कमरे इत्यादि में रहते थे मगर शादी के बाद यह ज़रूरी था कि कोई अलग मकान हो जिस में पति पत्नी रह सकें। अत: आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ि से इरशाद फ़रमाया कि अब तुम कोई मकान तलाश करो जिस में तुम दोनों रह सको। हज़रत अली रज़ि ने अस्थायी रूप से एक मकान का प्रबन्ध किया और इस में हज़रत फातिमा रज़ि की विदाई हो गई। इसी दिन विदाई के बाद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके मकान पर तशरीफ़ ले गए और थोड़ा सा पानी मंगा कर इस पर दुआ की। फिर वह पानी हज़रत फातिमा रज़ि अल्लाह तआला अन्हा और हज़रत अली रज़ि हर दो पर यह शब्द फ़रमाते हुए छिड़का कि

اَللّٰھُمَّ بَارِكْ فِيْھِمَا وَبَارِكْ عَلَيْھِمَا وَبَارِكْ لَھُمَا نَسْلَھُمَا

अर्थात हे मेरे अल्लाह! तुम इन दोनों के आपसी सम्बन्धों में बरकत दे और उनके इन सम्बन्धों में बरकत दे जो दूसरे लोगों के साथ स्थापित हूँ और उनकी नस्ल में बरकत दे। अर्थात ज़ाती सम्बन्ध भी और रिश्तेदारों के सम्बन्ध भी, परिवेश के सम्बन्ध भी। सब की बरकत की दुआ की और फ़रमाया कि उनकी नस्ल में बरकत दे। फिर आप इस नए जोड़े को अकेला छोड़कर वापिस तशरीफ़ ले आए। इस के बाद एक दिन आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत फातिमा रज़ि के घर तशरीफ़ ले गए तो हज़रत फातिमा रज़ि ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हारस: बिन नुअमान अन्सारी के पास कुछ एक मकान हैं। आप उन से फ़र्मा दें कि वह अपना कोई मकान ख़ाली कर दें। आप ने फ़रमाया वह हमारे लिए इतने मकान पहले ही ख़ाली कर चुके हैं। अब मुझे तो उन्हें कहते हुए शर्म आती है। हारस: रज़ि को किसी तरह उस का इल्म हुआ तो वह भागे आए और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया। हे रसूलुल्लाह! मेरा जो कुछ है वह हज़ूर का है और अल्लाह की क़सम! जो चीज़ आप मुझ से क़बूल फ़र्मा लेते हैं वह मुझे ज़्यादा ख़ुशी पहुंचाती है उस की तुलना में उस चीज़ के जो मेरे पास रहती है। फिर उस मुख़लिस सहाबी ने अपना एक मकान ख़ाली करवा के प्रस्तुत कर दिया। और हज़रत अली रज़ि अल्लाह और हज़रत फातिमा रज़ि ने वहां आकर रिहायश इख़तियार कर ली।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम-ए, पृष्ठ 456)

हज़रत आयशा से रिवायत है कि हुनैन के दिन आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से मुख़ातिब हो कर फ़रमाया कि तुम में से कौन रात को पहरा देगा? इस पर हज़रत हारस: बन नुअमान आहिस्ता-आहिस्ता इतमीनान से उठे। हज़रत हारसह अपने किसी भी काम में जल्दी नहीं किया करते थे। सहाबा ने उनके इतने आराम से उठने पर आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि लज्जा ने हारस: रज़ि को ख़राब कर दिया है। इस मौक़ा पर जल्दी उठना चाहिए था। इस पर आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐसा मत कहो कि लज्जा ने हारस: को ख़राब किया। यह ना कहो कि हारस: को ख़राब किया बल्कि अगर तुम यह कहो कि लज्जा ने हारस: को ठीक कर दिया है तो यह सच होगा।

(अल्मुनक्की मिन किताबुल मकारिमुलअख़लाक़ लिलख़राइती, पृष्ठ 68, अध्याय फ़ज़ीलतुल हया व जसीम ख़तरा ,हदीस 127 ,प्रकाशन दार अल्फ़िक्र दमिशक़ 1988 ई)

हज़रत हारस: बन नुअमान की वफ़ात हज़रत अमीर मुआवीया के दौर में हुई थी।

(अत्तबकातुल कुब्रा ,जिल्द 3,पृष्ठ 372 ,हारस: बन अल्नुअमान ,प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

अगले सहाबी हज़रत बशीर बिन साद हैं। उनकी कुनिय्यत अबू नुअमान थी। सअद बिन सअलबह उनके पिता थे। हज़रत सिमाक बिन सअद के भाई थे। क़बीला ख़ज़रज से उनका सम्बन्ध था।

(इस्तीआब, जिल्द 1,पृष्ठ 172, बशीर बिन साद, प्रकाशन दार अलजील बैरूत 1992 ई)

उनकी माता का नाम उनैस: बिंत ख़लीफ़ह था और आप की पत्नी का नाम अमरह बिंत रवाह: था। हज़रत बशीर बिन साद ज़माना जाहलियत में लिखना जानते थे। यह वह ज़माना था जब अरब में बहुत कम लोग लिखना जानते थे। आप बैअत-ए-अक़बा सानिया में सत्तर अंसार के साथ शामिल हुए थे। आप जंग बदर और उहद और जंगे ख़ंदक़ और बाक़ी के सारी जंगों में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शाबान 7 हिज्री में हज़रत बशीर बिन सअद की निगरानी में तीस आदमियों पर आधारित एक जंग फ़िदक में बनी मुर्रह की तरफ भेजा था। इन लोगों में भयंकर लड़ाई भी हुई। हज़रत बशीर निहायत बहादुरी से लड़े और लड़ते हुए आप रज़ि के टख़ने पर तलवार लगी और समझा गया कि आप शहीद हो गए हैं। दुश्मनों ने उनको छोड़ दिया कि शायद बेहोश हो के गिरे होंगे या शहीद हो गए हैं। छोड़ के आ गए। लेकिन जब शाम को आप को होश आई तो आप वहां से आप फ़िदक आ गए। फ़िदक में आप ने एक यहूदी के घर चंद दिन निवास किया और फिर मदीना वापिस तशरीफ़ ले आए। इसी तरह शवाल 7 हिज्री में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप को तीन सौ आदमियों के साथ यमन और जबार की तरफ़ रवाना फ़रमाया जो कि फ़िदक और वादी अलक़ुरा के मध्य स्थित है। यहां ग़तफ़ान के कुछ लोग उययनह बिन हिसन अल्फ़ज़ारी के साथ इकट्ठे हो गए थे। यह इस्लाम के ख़िलाफ़ मन्सूबे करते थे। हज़रत बशीर ने उनसे मुक़ाबला कर के उन्हें फैला कर दिया। मुस्लमानों ने कुछ को क़त्ल भी किया और कुछ को क़ैदी बनाया और माल ग़नीमत के साथ लौटे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ,जिल्द 3,पृष्ठ 402 से 403 ,बशीर बिन सअद ,प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

यह जंग और नुक़्सान पहुंचाने के लिए जमा हुआ करते थे। इसलिए उनके ख़िलाफ़ मुस्लमानों की सुरक्षा के लिए यह कार्रवाई की जाती थी। माल लौटना या क़त्ल करना मक़सद नहीं था। जैसा कि पिछले ख़ुत्बा में भी मैंने वर्णन किया था कि एक ग़लत हमला पर जिसका कोई औचित्य नहीं बनता था। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से बड़ी सख़्त नाराज़गी का इज़हार किया था कि क्यों तुम ने जंग लड़ी?

बशीर बिन सअद के बारे में एक रिवायत है जो उनके बेटे हज़रत नुअमान बिन बशीर वर्णन करते हैं। नुअमान बिन बशीर उनका नाम था कि उनके पिता उन्हें रसूलुल्लाह के पास लाए और अर्ज़ की कि मैंने अपने इस बेटे को अपना एक ग़ुलाम दिया है। इस पर रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि तुम ने अपने सारे बेटों को इसी तरह दिया है? उन्होंने कहा नहीं। इस पर रसूलुल्लाह ने फ़रमाया फिर इस से वापस ले लो।

(सही अलबख़ारी ,किताबुल हिब:, बाब अलहिब: लिल्वलद ,हदीस 2586)

एक रिवायत में यह है कि हज़रत नुअमान बिन बशीर कहते हैं कि मेरे पिता ने अपना कुछ माल मुझे प्रदान किया। (वह भी बुख़ारी की रिवायत है और यह भी)। इस पर मेरी माता उमरह बिन्त रवाहा ने कहा मैं राज़ी ना होंगी जब तक तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गवाह ना ठहराया। मेरे पिता नबी के पास गए ताकि वह आप को मेरे अतिया पर गवाह बनाएँ जो मुझे दिया था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम ने अपने सब बच्चों के साथ ऐसा ही किया है। हर एक को इतना ही माल दिया है या जो भी वह चीज़ थी? उन्होंने कहा कि नहीं। आप ने फ़रमाया कि अल्लाह का तक़्वा धारण करो और अपनी औलाद से इन्साफ का सुलूक करो। मेरे पिता वापिस आए और वह अतिया वापिस ले लिया।

(सही अलबुख़ारी ,किताबुल हिबा, बाब अल्अशहाद फ़िल हिबा हदीस 2587)

सही मुस्लिम की रिवायत में यह है कि आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे गवाह ना बनाओ क्योंकि मैं ज़ुल्म पर गवाही नहीं देता।

(सही मुस्लिम, किताब अल्हिब: हदीस 4182)

इस मसले की या इस हदीस को स्पष्ट करते हुए, व्याख्या करते हुए या इस तरह के हिबा को स्पष्ट करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह ने विस्तार से बहुत उत्तम वज़ाहत फ़रमाई है जो बड़ी अच्छी रहनुमाई है। आप फ़रमाते हैं कि मैं समझता हूँ कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह उपदेश प्रमुख चीज़ों के बारे में है। छोटी मोटी चीज़ों के बारे में नहीं है। जैसे अगर हम केला खा रहे हूँ तो हो सकता है कि बच्चा जो सामने मौजूद हो उसे हम दे दें और दूसरा वंचित रहे। हदीसों में घोड़े का उदाहरण आता है या माल का उदाहरण आता है या ग़ुलाम का ,कोई ऐसी क़ीमती चीज़ है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक व्यक्ति से फ़रमाया कि या तो वह अपने सब बेटों को एक घोड़ा दे या किसी को भी ना दे मगर उस की वजह यह थी कि अरबों में घोड़े की क़ीमत बहुत होती थी (या ग़ुलाम है तो ग़ुलाम भी एक जायदाद समझा जाता था या किसी भी किस्म का माल, जो क़ीमती चीज़ है। तो इसलिए उस के लिए मना किया गया है। और घोड़ा भी अरबों में बड़ी क़ीमती चीज़ थी।) अत: यह हुक्म इन चीज़ों के बारे में है जिसमें एक दूसरे से द्वैष पैदा होने की संभावना हो। एक बच्चे को दे दिया दूसरे को ना दिया तो एक दूसरे के ख़िलाफ़ दिल में आपस में रंजिशें पैदा हो सकती हैं। आप लखते हैं कि मामूली चीज़ों के बारे में नहीं है जैसे फ़र्ज़ करो कि बाज़ार गए हैं एक बच्चा हमारे साथ चला जाता है और हम उसे दुकान से कोट का कपड़ा ख़रीद देते हैं तो यह बिलकुल जायज़ होगा और यह नहीं कहा जाएगा कि जब तक सारों के लिए हम कोट ख़रीद कर ना लाएंगे एक बच्चे को भी कोट का कपड़ा ख़रीद कर नहीं दिया जा सकता। आप लिखते हैं कि हमारे हाँ कई बार कोई तोहफ़ा आता है तो एक बच्चा जो हमारे सामने होता है वह कहता है यह मुझे दे दिया जाए और हम वह तोहफ़ा उसे दे देते हैं। इस का यह मतलब नहीं होता कि हम दूसरे को महरूम रखते हैं बल्कि समझते हैं कि जब कोई और तोहफ़ा आया तो फिर दूसरे की बारी आ जाएगी। अत यह हुक्म छोटी छोटी चीज़ों के बारे में नहीं है बल्कि बड़ी बड़ी चीज़ों के बारे में है जिनमें इमतियाज़ी सुलूक करने से आपस में द्वेष और घृणा पैदा होने की संभावना हो सकती है। आप फ़रमाते हैं कि मेरा तो तरीक़ा यह है कि जब मेरा कोई बच्चा जवान होता है तो मैं उसे कुछ ज़मीन दे देता हूँ ताकि वग इस में से वसीयत कर सके। (जायदाद हो जाएगी। कोई वसीयत होगी उस का अब चंदा अदा करे) इस का यह मतलब नहीं होता कि मैं दूसरों को उनके हक़ से महरूम रखता हूँ बल्कि मैं कहता हूँ कि जब वह बालिग़ होंगे तो उन्हें भी यह हिस्सा मिल जाएगा मगर बहरहाल जायदाद ऐसी होनी चाहिए जो ख़ास एहमीयत ना रखती हो और अगर कोई व्यक्ति ऐसा हिबा करे जिससे दूसरों में द्वैष पैदा होनी की संभावना हो तो क़ुरआन करीम का हुक्म है कि वह उसे वापिस ले-ले और रिशतेदारों का भी फ़र्ज़ है कि उसे इस गुनाह से बचाएं।

(उद्धरित अलफ़ज़ल 16 अप्रैल 1960 ई पृष्ठ 5)

फिर एक मौक़ा पर इसी तरह के हिबा का एक मामला प्रस्तुत हुआ। मुफ़्ती साहिब ने प्रस्तुत किया तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने उस पर फ़रमाया कि हमें उस के मुताल्लिक़ क़ुरआन करीम का हुक्म देखना पड़ेगा जो उसने जायदाद को बंटने के बारे में दिया है। क़ुरआन करीम ने इस किस्म के हिबा को वर्णन नहीं किया बल्कि विरसा को वर्णन किया है जिस में सब मुस्तहक़्क़ीन के हुक़ूक़ का वर्णन कर दिया गया है। कई बार लोग अपनी जायदादों को बांटते हैं, इन चीज़ों का ख़्याल नहीं रखते और फिर मुक़द्दमे चलते हैं, रंजिशें पैदा होती हैं।

और फिर आप फ़रमाते हैं कि अब क़ुरआन करीम के निर्धारित किए गए हिस्सों को बदला नहीं जा सकता। अब देखना यह है कि इन आदेशों के निर्धारित करने में क्या हिक्मत है। विरासत की दृष्टि से क्यों सब लड़कों को बराबर मिलना चाहिए और एक लड़के की शिकायत पर क्यों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस के बाप को इरशाद फ़रमाया कि या तो तुम उस को भी घोड़ा ले दो या फिर दूसरे से भी ले लो। इस में हिक्मत यह है कि जिस तरह औलाद पर माता पिता की इताअत फ़र्ज़ है इसी तरह माता पिता के लिए भी औलाद से बारबरी का सुलूक और एक जैसी मुहब्बत करना फ़र्ज़ है लेकिन अगर माता पिता उस की ख़िलाफ़ करते हुए पक्षपात से काम लेते हैं, एक तरफ़ झुकाओ हो जाता है तो संभव है कि औलाद शायद अपने कर्तव्य से तो मुँह ना मोड़े। औलाद तो शायद माता पिता का हक़ अदा करती रहेगी लेकिन इन फर्ज़ों की अदायगी अर्थात माता पिता की ख़िदमत करने में कोई प्रसन्नता और ख़ुशी महसूस नहीं करेगी। बल्कि औलाद फिर उसे बोझ समझ कर अदा करेगी। ठीक है अल्लाह तआला ने कहा है ख़िदमत करो। हम ख़िदमत कर रहे हैं। ख़ुशी से नहीं कर रहे होंगे।

कुछ लोग लिखते हैं कि कुछ लोगों का इस किस्म का रवैय्या औलाद के लिए कष्ट देने वाला और मुहब्बत को तबाह करने वाला होता है जो औलाद और माँ बाप में होती है। इस लिए इस्लाम ने इस से मना किया है लेकिन वसीयत और हिबा जो कि अपनी औलाद के लिए नहीं होता बल्कि धर्म के लिए होता है जायज़ है। औलाद के इलावा, जायज़ वारिस जो हैं उनके इलावा आप हिबा और वसीयत कर सकते हैं क्योंकि वह आदमी इस से ख़ुद भी महरूम रहता है। सिर्फ औलाद ही को नुक़्सान नहीं पहुँचाता बल्कि उस की ज़ात को भी पहुंचता है चूँकि ख़ुदा तआला के रास्ता में ख़र्च होता है। इस लिए औलाद भी इस से नाराज़ नहीं होती, उस को ग़म नहीं होता लेकिन अगर हिबा या वसीयत किसी ख़ास औलाद के नाम हो तो फिर नाजायज़ होगा। इस में एक बात समझने वाली यह है कि एक वक़्ती ज़िम्मेदारी होती है जिसे अदा करना ज़रूरी होता है। इस का उदाहरण इस प्रकार समझ लीजीए कि एक व्यक्ति के चार लड़के हैं और उसने सबसे बड़े लड़के को एम-ए की तालीम दिला दी और दूसरे छोटी कक्षाओं में पढ़ रहे थे कि इस की नौकरी हट गई या आमद कम हो गई और छोटे बच्चों की शिक्षा रुक गई। अब यह ऐतराज़ नहीं हो सकता कि उसने बड़े लड़के से इमतियाज़ किया है बल्कि यह तो इत्तिफ़ाक़ी बात है। इस की तो कोशिश थी कि मैं पहले बड़े लड़के को पढ़ाता हूँ फिर दूसरों को बारी बारी एम-ए तक पढ़ाऊंगा या जहां तक पढ़ सकते हैं पढ़ाऊंगा अर्थात वक़्ती ज़रूरीयात के अधीन उसने ज़िम्मेदारी को तक़सीम किया। (नीयत नेक थी) इस वक़्त यह काम कर लेता हूँ जब दूसरे का वक़्त आएगा तो वह कर लूँगा मगर फिर हालात बदल गए और वह अपनी इच्छाओं को पूरा ना कर सका। लेकिन इसके विपरीत अगर एक पिता अपने बड़े लड़के को जो परिवार वाला हो गया हो दो हज़ार रुपया देकर अलग कर दे कि तुम तिजारत करो मगर जब दूसरे लड़के भी साहिब औलाद हो जाएं तो उन्हें कुछ ना दे तो यह नाजायज़ है और इमतियाज़ी सुलूक होगा। बहरहाल हिबा के बारे में या ख़ास जायदाद के बारे में यह फ़िक़्हही मसला है जिसे हर एक को अपने सामने जायदाद की तक़सीम के वक़्त या हिबा करते वक़्त, वसीयत करते वक़्त रखना चाहिए।

(उद्धरित फर्मूदात मुस्लेह मौऊद रज़ि लेखक सय्यद शमसुल-हक़ साहिब मुरब्बी सिलसिला, पृष्ठ 316 से 317)

जंगे ख़ंदक़ के मौक़ा पर यह रिवायत है कि हज़रत बशीर बिन साद (जिन सहाबी का ज़िक्र हो रहा है उनकी बेटी वर्णन करती हैं कि मेरी माँ उमरह बिंत-ए-रवाहा ने मेरे कपड़ों में थोड़ी सी खजूरें देकर कहा कि बेटी यह अपने बाप और मामूं को दे आओ और कहना कि यह तुम्हारा सुबह का खाना है। आप की बेटी कहती हैं मैं इन ख़जूरों को लेकर चली और अपने पिता और मामूं को ढूँढती हुई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास से गुज़री तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हे लड़की ! यह तेरे पास किया चीज़ है? मैंने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह! यह खजूरें हैं। मेरी माँ ने मेरे पिता बशीर बिन साद और मेरे मामूं अबदुल्लाह बिन रवाहा के लिए भेजी हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह लाओ मुझे दे दो। मैंने वे खजूरें आप के दोनों हाथों में रख दीं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन ख़जूरों को एक कपड़े पर डाल दिया और फिर उनको एक और कपड़े से ढाँप दिया और एक व्यक्ति से फ़रमाया कि लोगों को खाने के लिए बुला लो। अत: सारी ख़ंदक़ के खोदने वाले जमा हो गए और उन ख़जूरों को खाने लगे और वे खजूरें ज़्यादा होती गईं यहां तक कि जब ख़ंदक़ वाले खा चुके तो खजूरें कपड़े के किनारे पर से नीचे गिर रही थीं। ऐसी बरकत उनमें पड़ी।

(सीरत इब्न हिशाम ,पृष्ठ 454 से 455 , बाब मा ज़हर ले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मिन आले आयात फ़ी हफ़र अलख़नदक़ ,प्रकाशन दार इब्न हज़म बैरूत 2009 ई)

हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के ज़माना ख़िलाफ़त में 12 हिज्री में हज़रत बशीर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के साथ जंगअयुनुत्तमर में शरीक हुए और आप को शहादत नसीब हुई।

(इसाबा, जिल्द 1,पृष्ठ 442 ,बशीर बिन साद, प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1995 ई)

अयनुल अलत्तमर कूफ़ा के क़रीब एक जगह है। मुस्लमानों ने 12 हिज्री में हज़रत अबूबकर के ख़िलाफ़तके ज़माने में इस इलाक़े को फ़तह किया था।

(मोअज्जम अलबुलदान, जिल्द 4,पृष्ठ 199 ,प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब उमरा क़ज़ा के लिए ज़ी अलक़ादा 7 हिज्री में रवाना हुए तो आप ने हथियार आगे भेज दिए थे और उन पर हज़रत बशीर बिन साद को निगरान निर्धारित फ़रमाया।

(अत्तबकातुल कुब्रा, जिल्द 3,पृष्ठ 403 ,बशीर बिन साद , प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

उमरा क़ज़ा का विस्तार यह है कि हुदैबिया के सुलह नामा की वजह से वहां उमरा तो नहीं हो सका था और इस में एक शक़ यह भी थी कि अगले साल आं हुज़ूर

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का आकर उमरा अदा करेंगे और तीन दिन मक्का में ठहरेंगे।

(सही अलबुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी ,बाब अमरतुल अलक़ज़ा,हदीस4252)

इस संधि के अनुसार, इस अनुभाग के अनुसार 7 ज़विल क़ादा हिज्री में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उमरा अदा करने के लिए मक्का रवाना होने का इरादा फ़रमाया और ऐलान कर दिया कि जो लोग पिछले साल हुदैबिया में शरीक थे वे सब मेरे साथ चलेंगे। अत: उन लोगों के अतिरिक्त जो जंग ख़ैबर में शहीद या वफ़ात पा चुके थे सब ने यह सआदत हासिल की और कुछ को हथियारों के साथ आगे भेज दिया। अब यह है कि उमरा पर जाने के लिए हथियारों की क्या ज़रूरत थी? इस बारे में जो विस्तार मिलता है वह यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को चूँकि कुफ़्फ़ार-ए-मक्का पर भरोसा नहीं था कि वह अपने वादा को पूरा करेंगे इस लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग की पूरी तैयारी के साथ, अपने जो हथियार ले जा सकते थे वे लेकर गए और रवानगी के समय एक सहाबी को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू रहम ग़फ़्फ़ारी को मदीना पर हाकिम बना दिया और दो हज़ार मुसलमानों के साथ जिन में एक सौ घोड़ों पर सवार थे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का के लिए रवाना हुए। साठ ऊंट क़ुर्बानी के लिए साथ लिए थे। जब कुफ़्फ़ार मक्का को ख़बर मिली कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हथियारों और जंग के सामान के साथ मक्का आ रहे हैं तो वे बहुत घबराए और उन्होंने कुछ आदमियों को सूरत-ए-हाल की तहक़ीक़ात के लिए मर्रालज़्ज़हरान तक भेजा। मुहम्मद बिन मसलमह जो घुड़ सवारों के अफ़्सर थे क़ुरैश के क़ासिदों ने उन से मुलाक़ात की। उन्होंने इतमीनान दिलाया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुलह नामा की शर्त के अनुसार बिना हथियार के मक्का में दाख़िल होंगे। यह सुनकर कुफ़्फ़ार जो थे सन्तुष्ट हो गए। अत: हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब मुक़ाम उ़जुज़ में पहुंचे जो मक्का से आठ मील दूर है तो सारे हथियारों को इस जगह रख दिया और बशीर बिन साद की निगरानी में कुठ सहाबा कराम को इन हथियारों की हिफ़ाज़त के लिए निर्धारत फ़र्मा दिया और अपने साथ एक तलवार के सिवा कोई हथियार नहीं रखा और सहाबा कराम की भीड़ के साथ लब्बैक पढ़ते हुए हर्म की तरफ़ बढ़े। कहा जाता है कि जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ास हर्म में, काअबा में दाख़िल हुए तो क़ुरैश के कुछ कुफ़्फ़ार जो थे मारे जलन के इस मंज़र को देख ना सके और पहाड़ों पर चले गए कि हम नहीं देख सकते कि मुसलमान इस तरह तवाफ़ कर रहे हों। मगर कुछ कुफ़्फ़ार अपने दारुन्नदव जो उन के मश्वरे की एक कमेटी घर था इस में जमा हो गए, वहां खड़े हो के आँखें फाड़ फाड़ के तौहीद तथा रिसालत के नशे से मस्त ये जो मुसलमान लोग थे वे उनके तवाफ़ का नज़ारा करने लगे और आपस में कहने लगे कि ये मुसलमान भला क्या तवाफ़ करेंगे। उनको तो भूख और मदीना के बुख़ार ने कुचल कर रख दिया है। बहुत कमज़ोर किस्म के ये लोग हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मस्जिद हराम में पहुंच कर इज़तिबा कर लिया अर्थात चादर को इस तरह ओढ़ लिया कि आपका दाहिना कंधा और बाज़ू खुल गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ख़ुदा इस पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाए जो इन कुफ़्फ़ार के सामने अपनी क़ुव्वत का इज़हार करे। अर्थात कुफ़्फ़ार तो ये बातें कर रहे हैं उन्होंने जो कहा वे बातें आप तक पहुंचीं लेकिन तुम अपनी क़ुव्वत का इज़हार करो। इस तरह क़ुव्वत का इज़हार कि तुम्हारे ये कमज़ोर जिस्म ना नज़र आएं बल्कि मज़बूत जिस्म नज़र आएं या चौड़े सीने नज़र आएं। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अस्हाब के साथ शुरू के तीन फेरों में कंधों को हिला हिला कर ख़ूब अकड़ते हुए चल कर तवाफ़ किया। इस को अरबी ज़बान में रमल कहते हैं। अत: यह सुन्नत आज तक बाक़ी है और क़ियामत तक बाक़ी रहेगी कि हर तवाफ़-ए-काबा करने वाला शुरू तवाफ़ के तीन फेरों में रमल करता है। तो यह है वजह इस तरह पहले चलने की।

(शरह जरक़ानी अला मुवहिबुर्रहमानी लिदुन्नया ,जिल्द 3 ,पृष्ठ 314 से 317,321 से 323, बाब अमरतुल क़ज़ा,प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1996 ई) (सीरत इब्न हिशाम, पृष्ठ 529 ,बाब अमरतुल क़ज़ा, प्रकाशन दार इब्न हज़म बैरूत 2009 ई)(लुग़ातुल हदीस ,जिल्द 2 ,पृष्ठ 163 ,प्रकाशन नुमानी कुतुब ख़ाना लाहौर 2005 ई)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कितने उमरे किए? इस के बारे में जो बुख़ारी की हदीस है, रावी वर्णन करते हैं कि मैं ने हज़रत अनस रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से पूछा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कितने उमरे किए थे तो उन्होंने कहा कि चार। उमरा हुदैबिया जो ज़विल क़ादा में किया क्या, यद्यपि यह उमरा तो नहीं हो सका था लेकिन इस को उमरा इस लिए गिना जाता है कि वहां क़ुर्बानी इत्यादि कर ली थी। सर मूंढ लिए थे और इस लिहाज़ से इस को कुछ लोगों ने शुमार कर लिया। फिर कहते हैं दूसरा जब मुशरिकों ने आप को रोका था सुलह हुदैबिया में तो यह एक उमरा हो गया। वह उमरा दूसरे साल ज़ी अलक़ादा में हुआ अर्थात जो दूसरा उमरा था। पहले साल तो हुदैबिया का असल में नहीं हो सका सिवाए क़ुर्बानी इत्यादि के और दूसरा उमरा ज़ी अलक़ादा में दूसरे साल हुआ जब आप ने उनसे सुलह की और फिर आगे लिखा है कि उमरा जिअरानह जब आपने माल-ए-ग़नीमत तक़सीम किया। यह कहते हैं कि मेरा ख़्याल है कि ये जंग हुनीन की ग़नीमत थी, उस वक़्त भी उमरा किया तो मैंने कहा आप ने कितने हज किए? रावी ने पूछा। उन्होंने कहा हज एक ही किया था और हज के मौक़ा पर भी उमरा अदा किया था इस तरह कुछ लोग चार उमरे गिनते हैं। कुछ दो गिनते हैं।

(सही अलबख़ारी, किताबुल उमर बाब कम अतमर अन्नबी (सल.) हदीस 1778 से 1779)

हज़रत बशीर बिन साद अंसार के पहले व्यक्ति थे जिन्हों ने हज़रत अबूबकर सदीक़ के हाथ पर सक़ीफ़ा बनू साअदा के दिन बैअत की थी।(इस्तीआब, जिल्द 1,पृष्ठ 172ता173, बशीर बिन सादओ, प्रकाशन दार अलजील बैरूत 1992 ई)

सक़ीफ़ा बनू साअदा क्या है? इस के बारे में लिखा है कि मदीना में ये बनू ख़ज़रज के बैठने की जगह होती थी।

(मोअज्जम अल्बुलदान जिल्द 3 पृष्ठ 259 दारुल कुतुब अल्इलिमया बैरूत)

बहरहाल ये कमरा था या उस ज़माने के लिहाज़ से शैड (shade) डाला हुआ था। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद यहां पर सक़ीफ़ा बनी साअदा में बनू ख़ज़रज का नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जानशीनी के हवाले से एक इज्लास जारी था। इस इज्लास की ख़बर हज़रत उमर को दी गई और साथ ही यह कहा गया कि हो सकता है कि मुनाफ़क़ीन और अंसार के कारण कोई फ़ित्ना ना फैल जाए। इस पर हज़रत उम्र फ़ारूक़ रज़ि हज़रत अबूबकर सदीक़ को लेकर सक़ीफ़ा बनी साइदा चले गए। यहां जा कर मालूम हुआ कि बनू ख़ज़रज जा नशीनी के दावेदार हैं और बनू ओस उस की मुख़ालिफ़त कर रहे हैं। आपस में ये मदीना के अंसार के दोनों क़बीले थे। ऐसे मौक़ा पर एक अंसारी सहाबी ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह कथन याद कराया कि हुकमरान तो क़ुरैश में से ही होंगे जो उस वक़्त इस बहस के दौरान अधिकांश लोगों के दिलों में उतर गया। अंसार अपने दावे से हट गए और सब ने फ़ौरन ही अबूबकर की ख़िलाफ़त पर बैअत कर ली मगर उस के बावजूद हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि तीन दिन तक यह ऐलान कराते रहे कि आप सक़ीफ़ा बनी साअदा की बैअत से आज़ाद हैं। अगर किसी को एतराज़ है तो बता दे मगर किसी को एतराज़ नहीं हुआ ये तो एक माख़ज़ है। डाक्टर हमीदुल्लाह की किताब से एक जगह संक्षिप्त यह ज़िक्र किया गया है।

(सीरत इब्न हश्शाम ,पृष्ठ 668 ,अमर सक़ीफ़ बनी साअद ,प्रकाशन दार इब्न हज़म बैरूत 2009 ई)(उद्धिरत मुहम्मद रसूलुल्लाह की हुक्मरानी तथा जानशीनी लेखक डाक्टर मुहम्मद हमीदुल्लाह अनुवादक प्रोफ़ैसर ख़ालिद परवेज़, पृष्ठ 155 से 156 ,प्रकाशन अलमक्तब अल्रहमानी लाहौर 2006 ई)

लेकिन इस की एक मज़ीद विस्तार जो है वह इस तरह है कि जब यह सारी घटना हुई। आपस में मीटिंगें हो रही थीं। मुनाफ़क़ीन अंसार को उभारने की कोशिशें कर रहे थे तो हज़रत उमर रज़ि के साथ हज़रत अबूबकर सदीक़ रज़ि वहां पहुंचे पर अंसार ने आप के सामने फिर अपनी राय का इज़हार किया। हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने भी अपनी राय ज़ाहिर फ़रमाई। इस सारी कार्रवाई से यह अंदाज़ा होता है कि अंसार तथा मुहाजरीन सब इस्लाम के लाभ में ही सोचते थे। मुनाफ़क़ीन तो सोच रहे होंगे कि हम फ़ित्ना पैदा करें लेकिन अंसार में से भी जो मोमिनीन थे वे तो लाभ में सोच रहे थे कि ख़िलाफ़त का या इमामत की स्थापना ज़रूरी है चाहे वह अंसार में से हो या मुहाजरीन में से और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद ख़िलाफ़त को चाहते थे और इसी की उनको ख़वाहिश थी और वह एक दिन भी बिना जमाअत और अमीर के नहीं गुज़ारना चाहते थे। अत: एक राय यह थी कि अंसार में से अमीर हो। दूसरी राय यह थी कि मुहाजरीन में से अमीर हो क्योंकि उनके बिना अरब किसी के नेतृत्व को क़बूल नहीं करेगा। इस के इलावा तीसरी राय ये भी थी कि दो अमीर हों। एक अंसार में से और एक क़ुरैश में से। यहां मुहाजरीन ने अंसार को यह भी बताया कि इस वक़्त क़ुरैश में से ही अमीर होना ज़रूरी है। अत: उन्होंने अपनी राय के समर्थन में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद क़ुरैश में इमामत की स्थापना के बारे में आप

की यह पेशगोई भी प्रस्तुत की जिसका पहले ज़िक्र हो चुका है कि اَلْاَئِمَّةُ مِنْ قُرَيْش कि इमाम क़ुरैश में से होंगे।

(अस्सीरतुल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ,504 से 506 ,बाब यज़कर फिहे मुद्दते मरज़ेहा दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002 ई)

हज़रत अबू उबैदा बिन जराह ने अंसार को मुख़ातिब कर के कहा कि हे अन्सारे मदीना! तुम वे हो जिन्होंने सबसे बढ़कर ख़ुद को इस धर्म की ख़िदमत के लिए प्रस्तुत किया था और अब उस वक़्त तुम सबसे पहले उसे बदलने और बिगाड़ने वाले ना बनो। यह ना कहो कि अंसार में से अमीर हो या दोनों में से अमीर हो। इस हक़ीक़त से भरे हुए पैग़ाम से अंसार ने असर लिया और उन में से हज़रत बशीर बिन साद उठे जिन सहाबी का ज़िक्र हो रहा है और अंसार से यूं मुख़ातिब हुए कि हे अंसार ! अल्लाह की क़सम ! यद्यपि हमें मुशरिकों से जिहाद करने में धर्म में सबक़त के लिहाज़ से मुहाजरीन पर फ़ज़ीलत है। यह हम ने केवल अल्लाह तआला की रज़ा और रसूल की इताअत और अपने नफ़सों की इस्लाह के लिए किया था। हमें यह उचित नहीं है कि हम अब गर्व तथा अंहकार से काम लें और धार्मिक सेवाओं के बदले में ऐसे बदले को चाहें जिसमें दुनिया मांगने की बू आती हो। हमारा बदला अल्लाह तआला के पास है और वही हमारे लिए काफ़ी है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ुरैश में से थे और वही लोग इस ख़िलाफ़त के हक़दार हैं। अल्लाह ना करे कि हम उनसे झगड़े में मुबतला हूँ। हे अंसार! अल्लाह तआला का तक़्वा धारण करो और मुहाजरीन से मतभेद ना करो। इन सब बातों के बाद फिर हज़रत हुबाब बिन मंज़र ने अंसार की एहमीयत का ज़िक्र करना शुरू कर दिया लेकिन हज़रत उमर रज़ि ने फिर अवस्था को सँभाला। मैं संक्षेप में क़िस्सा को वर्णन कर रहा हूँ और हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह का हाथ पकड़ लिया और कहा कि हमारी बैअत लें और साथ ही हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत अबू बकर रज़ि की बैअत कर ली और अर्ज़ की कि हे अबू बकर रज़ि! आप को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया था कि आप नमाज़ पढ़ाया करें। अत: आप ही ख़लीफ़तुल्लाह हैं। हम आप की बैअत इसलिए करते हैं कि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हम सबसे ज़्यादा महबूब हैं। हज़रत उमर रज़ि के बाद हज़रत अबू उबैदा बिन जराह ने बैअत की और फिर अंसार में से हज़रत बशीर बिन साद ने शीघ्र बैअत कर ली। इसके बाद हज़रत ज़ैद बिन साबित अन्सारी ने बैअत की और हज़रत अबूबकर का हाथ थाम कर अंसार से मुख़ातिब हुए और उन्हें भी हज़रत अबू बकर रज़ि की बैअत करने की तरग़ीब दी। अत: अंसार ने भी हज़रत अबू बकर रज़ि की बैअत की।

(अलकामेलुल तारीख़,जिल्द 2,पृष्ठ 193 हदीस अस्सकीफ: व ख़िलाफत अबी बक्र व अरज़ाहू, प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2006ई) (अस्सीरतुल हलबिया जिल्द 3, पृष्ठ 506 ,बाब यज़करो फीहा ,दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002 ई)

यह बैअत इस्लामी लिट्रेचर मैं बैअत सक़ीफ़ा और बैअत ख़ास्सा के नाम से भी मशहूर है।

(तारीख़ुल ख़लफ़ा राशदीन लेखक मुहम्मद सुहेल तक़ोश, पृष्ठ 22, 367,प्रकाशन दारुन्नफाइस बैरूत 2011ई)

हज़रत अबू मसऊद अनसारी वर्णन करते हैं कि एक बार हम साद बिन अबाद की मजलिस में थे कि रसूलुल्लाह हमारे पास तशरीफ लाए। हज़रत बशीर बिन साद ने आप की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला ने हमें हुक्म दिया है कि हम आप पर दरूद भेजें तो हम किस तरह आप पर दरूद भेजें। रावी कहते हैं उस सवाल पर रसूलुल्लाह ख़ामोश रहे। लंबा समय ख़ामोश रहे। यहां तक कि हमने ख़वाहिश की कि काश वह आप से सवाल ना करता। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह कहा करो कि

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ فِي الْعَالَمِيْنَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

और सलाम इस तरह जैसा कि तुम जानते हो किस तरह सलाम करना है। (सही मुस्लिम किताबुस्लात ,बाब सलातुन्नबी ,हदीस 907)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

अब आज के इन सहाबा का ये ज़िक्र ख़त्म होता है। एक दुआ के लिए मैं कहना चाहता हूँ पिछले दिनों बंग्लादेश में जलसा के इंतिज़ामात हो रहे थे लेकिन वहां नई जगह जलसा करना था। अहमद नगर उनका एक शहर है, उल्मा ने (तथाकथित उल्मा कहना चाहिए) और मुख़ालफ़ीन ने बहुत ज़्यादा शोर मचाया। हुकूमत से पहले मुतालिबा करते रहे जलसा रोकें और जब हुकूमत ने नहीं माना तो फिर बलवाइयों ने अहमदियों के घरों और दुकानों इत्यादि पर हमला किया कुछ घर जलाए, कुछ दुकानें लूटीं, जलाईं, कुछ अहमदी ज़ख़्मी भी हुए हैं। दुआ करें अल्लाह तआला वहां हालात बेहतर करे और जो ज़ख़्मी हैं अल्लाह तआला उनको जल्द सेहत भी प्रदान फ़रमाए। सम्पूर्ण शिफ़ा प्रदान फ़रमाए। उनके नुक़्सानात भी पूरे फ़रमाए और भविष्य में जब भी जलसा की तारीख़ निर्धारित हो वे लोग अमन से वहां जलसा कर सकें।

नमाज़ों के बाद में एक जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा जो अदरणीया सिद्दीक़ा बेगम साहिबा दुनियापुर पाकिस्तान का है। यह लईक अहमद मुश्ताक़ साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज सूरीनाम दक्षिण अमरीका की माता थीं और शेख़ मुज़फ़्फ़र अहमद साहिब की पत्नी थीं। 1 फरवरी को 74 साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई है। इना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन।

उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके दादा मुहतरम शेख़ मुहम्मद सुलतान साहिब के द्वारा आई थी जिन्होंने 1897 ई में 24 साल की उम्र में बैअत की तौफ़ीक़ पाई थी। मरहूमा की शादी 29 अगस्त 1964 ई में हुई। सारी ज़िन्दगी एक मिसाली बीवी की हैसियत से गुज़ारी। सीमित आमदनी में अमीरी का भ्रम रखते हुए ना सिर्फ अपने बड़े ख़ानदान की परवरिश की बल्कि अपने देवरों और नन्दों की शादियां भी करवाईं। हमेशा अपने आराम पर दूसरों के आराम को प्राथमिकता देती थीं। नमाज़ तथा रोज़े की पाबंद थीं। दुआ करने वाली थीं। विनम्र मिज़ाज की थीं। मिलनसार थीं। सादा-मिज़ाज थीं। ग़रीबों का ध्यान रखने वाली और नेक और श्रद्धा वाली औरत थीं। बाक़ायदगी से क़ुरआन करीम की तिलावत क्या करती थीं और कई अहमदी और ग़ैर अहमदी बच्चियों को क़ुरआन करीम सादा पढ़ाने की भी तौफ़ीक़ पाई। क़ुरआन करीम से बड़ी मुहब्बत थी। अपनी एक बेटी और दो बेटों को भी अपने ख़र्च पर हाफ़िज़ बना के क़ुरआन करीम हिफ़्ज़ करवाया।

दुनियापुर में सदर लजना के इलावा सैक्रेटरी माल और इशाअत के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। ख़िलाफ़त से बहुत अक़ीदत का सम्बन्ध था। मरहूमा मूसिया थीं। उन्होंने मियां और दो बेटियां और पाँच बेटे यादगार छोड़े हैं। उनके दो बेटे वाक़िफ़ ज़िन्दगी हैं जिन में से एक जैसा कि मैंने ज़िक्र किया लईक अहमद मुश्ताक़ साहिब दक्षिण अमरीका में मुबल्लिग़ इंचार्ज सूरीनाम (Suriname) ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। माता की वफ़ात के वक़्त यह पाकिस्तान भी नहीं जा सके थे। उनके दूसरे बेटे मुहम्मद वलीद अहमद मुरब्बी सिलसिला हैं वह भी पाकिस्तान में हैं। वहां ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। एक दामाद मुज़फ़्फ़र अहमद ख़ालिद साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं जो पाकिस्तान में ही रब्वह में इस्लाहो इरशाद मर्कज़िया मैं ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए स्तर बुलंद करे। उनके बच्चों को उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ दे। उनके हक़ में उनकी दुआएं कुबूल फ़रमाए।

☆ ☆ ☆
☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

ख़ुत्बः जुमअः

मियां महमूद में इस क़दर धार्मिक जोश पाया जाता है कि मैं कई बार उन के लिए खासतौर पर दुआ करता हूँ
(हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम)

इलाही मुझे मेरी आँखों से इस्लाम को ज़िंदा कर के दिखा। (हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो)

आप की तक़ारीर , आप के ख़ताबात, आप की तसानीफ़, आप की क़ुरआन की तफ़सीर इस बात की गवाह हैं कि ख़ुदा तआला ने आप को पढ़ाया ।

आप के अलफ़ाज़ असर और जज़ब और ख़ुलूस और गुदाज़ में गूँधे हुए थे, कलाम बनावट से पाक था और तहरीर तकल्लुफ़ से पाक थी, तक़रीर में एक कुदरती रवानी थी। और तहरीर सलासत का एक बहता हुआ दरिया थी, दोनों ही कुरान के उलूम और इर्फ़ान के पानी से लबरेज़ और दिल तथा दिमाग़ को एक साथ सेराब करते थे। (सवानिहफ़ज़ल उमर रज़ि)

इतनी छोटी सी उम्र में ख़्यालात की पुख़्तगी चमत्कार से कम नहीं, मेरे ख़्याल में ये भी हुज़ूर अलैहिस्सलाम की सदाक़त का एक निशान है (हज़रत क़ाज़ी मुहम्मद ज़हूर उद्दीन अकमल साहिब)

अगर यह कहना दरुस्त है कि इन्सान की रूह दूसरे पर उतरती है तो हम कह सकते हैं कि उस वक़्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रूह आप पर उतर रही थी और इस बात का ऐलान कर रही थी कि यह है मेरा प्यारा बेटा जो मुझे रहमत के निशान के रूप में दिया गया था और जिसके बारे में यह कहा गया था कि वो हुस्न-ओ-एहसान में तेरा नज़ीर होगा। (हज़रत मौलवी शेर अली साहिब रज़ि)

मैं हज़रत उलुल अज़्म मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद .. को उनके बचपन से देख रहा हूँ कि किस तरह हमेशा उनकी आदत लज्जा ओर शराफ़त और सदाक़त और धर्म की तरफ़ ध्यान देने की थी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के धार्मिक कामों में बचपन से ही उनको शौक़ था (हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ि)

हे मेरे ख़ुदा मेरी क़ौम को सारी इबतिलाओं और दुखों से बचा और किस्म किस्म की मुसीबतों से उन्हें महफ़ूज़ रख, उनमें बड़े बड़े बुज़ुर्ग पैदा कर, ये एक क़ौम हो जाए जो तूने पसंद कर ली हो और यह एक गिरोह हो जिसको तो अपने लिए विशेष कर ले (आमीन)
अल्लाह तआला हज़ारों हज़ार रहमतें नाज़िल फ़रमाए आपकी रूह पर जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म को फैलाने औरआपके ग़ुलाम सादिक़ और मसीह मौऊद और महदी माहूद के मक़सद को पूरा करने के लिए रात-दिन एक कर के और अपने अहद को पूरा कर के अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर हुई।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त का एक ज़बरदस्त निशान, एक महान बेटे के जन्म की पेशगोई का वर्णन।

इस पेशगोई के मिस्दाक़ हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो की सीरत तथा सवानेह से दिल को छूने वाली घटनाएं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो की दलों में प्रभाव पैदा करने वाली एक दुआ वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 22 फरवरी 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आजकल जमाअत में यौम मुस्लेह मौऊद के बारे में जलसे हो रहे हैं अर्थात इस पेशगोई के हवाले से जिसमें अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को एक मौऊद बेटे की ख़बर दी थी। जिसके बारे में अल्लाह तआला ने फरमाया था कि इस बेटे को वह ख़ास गुणों पर आधारित बनाएगा। वह धर्म का ख़ादिम होगा। लंबी उम्र पाएगा और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को आगे चलाएगा। यह पेशगोई 20 फरवरी 1886 ई की है। यह पेशगोई हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह तआला के समर्थन और आप की सदाक़त का एक बहुत बड़ा निशान है। अत: जो समय इस बच्चे की पैदाइश का दिया गया था। इस के अनुसार 12 जनवरी 1889 ई को वह लड़का पैदा हुआ जिसका नाम मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रखा गया जिन को अल्लाह तआला ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि की वफात के बाद ख़िलाफ़त की चादर पहनाई।

इस समय मैं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो की ज़िंदगी की कुछ घटनाएं और आप रज़ि का इस पेशगोई का मिस्दाक़ होने के बारे में कुछ वर्णन करूँगा। लेकिन इस से पहले मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में इस पेशगोई का महत्तव और सच्चाई के बारे में जो आपने इरशाद फ़रमाया है प्रस्तुत करता हूँ। यह पेशगोई एक बेटे की पैदाइश की नहीं थी बल्कि एक ऐसे अज़ीमुश्शान फ़र्ज़ंद के जन्म की पेशगोई थी जिसके आने से एक रुहानी इन्क़िलाब का आरम्भ किया जाने वाला था। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने आलोचकों को जो जवाब दिया है जैसा कि मैंने कहा वह प्रस्तुत करता हूँ। वह आप के शब्दों में ही पढ़ने से सम्बन्ध रखता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "इस जगह आँखें खोल कर देख लेना चाहिए कि यह सिर्फ़ पेशगोई ही नहीं बल्कि एक अज़ीमुश्शान निशाने आसमानी है जिसको सम्मान वाले ख़ुदा तआला ने हमारे नबी करीम रऊफ़-ओ-रहीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सदाक़त तथा अज़मत दिखाने के लिए प्रकट फ़रमाया है। और वास्तव में यह निशान एक मुर्दा के ज़िंदा करने से सैंकड़ों दर्जा उच्च, पूर्ण तथा उत्तम है क्योंकि मुर्दा के ज़िंदा करने की हक़ीक़त यही है कि अल्लाह तआला की जनाब में दुआ कर के एक रूह वापस मंगवाई जाए। और ऐसा मुर्दा ज़िंदा करना हज़रत मसीह और कुछ अन्य अंबिया अलैहिमुस्सालम के बारे में बाईबल में लिखा गया है जिसके सबूत में आलोचकों की बहुत सी बातें की हैं। और फिर इन सब अकली और नक़ली आलोचना के यह भी वर्णित है कि ऐसा मुर्दा सिर्फ़ कुछ मिनट के लिए ज़िंदा रहता था। और फिर दुबारा अपने प्यारों को दोहरे

मातम में डाल कर इस दुनिया से विदा हो जाता जिसके दुनिया में आने से ना दुनिया को कुछ फ़ायदा पहुंचता था ना ख़ुद उस को आराम मिलता था और ना उसके प्रियों को कोई सच्ची ख़ुशी हासिल होती थी। अत: अगर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की दुआ से भी कोई रूह दुनिया में आई तो वास्तव में उस का आना ना आना बराबर था। और मान लो कि अगर ऐसी रूह कई साल जिस्म में बाक़ी भी रहती, तब भी एक कमज़ोर रूह किसी गन्दी या दुनिया परस्त की जो اَحَدٌ مِنَ النَّاسِ है दुनिया को क्या फ़ायदा पहुंचा सकती थी? मगर इस जगह"... आप पेशगोई के बारे में फ़रमाते हैं कि अगर पहले इन अंबिया की रूहें वापस आती रहीं। किसी मुर्दे को ज़िंदा किया तो एक आरिज़ी थीं और वे लोग एक आम आदमी होते थे लेकिन आप फ़रमाते हैं कि ..."इस जगह अल्लाह तआला के तथा इहसान से और आं हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बरकत से , ख़ुदावंद करीम ने इस विनीत की दुआ को क़बूल कर के ऐसी बरकतों वाली रूह भेजने का वाादा फ़रमाया जिसके ज़ाहरी तथा बातनी बरकतें सारी ज़मीन पर फैलेंगी। अत: यद्यपि यह निशान मुर्दों को ज़िन्दा करने के बराबर मालूम होता है। मगर ध्यान देने से मालूम होगा कि यह निशान मुर्दों के ज़िन्दा करने से सैंकड़ों दर्जा बेहतर है। मुर्दा की भी रूह ही दुआ से वापस आती है और इस जगह भी दुआ से एक रूह ही मँगाई गई है। आप ने फ़रमाया बच्चा के लिए जो यह दुआ की गई थी कि दुआ से ही एक रूह मँगाई गई है। "मगर इन रूहों और इस रूह में लाखों कोसों का फ़र्क़ है। जो लोग मुसलमानों में छुपे हुए मुर्तद हैं वे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चमत्कारों का ज़हूर देखकर ख़ुश नहीं होते बल्कि उनको बड़ा दुख पहुंचता है कि ऐसा क्यों हुआ?

(मजमूआ इश्तिहारात, जिल्द अव्वल, पृष्ठ 114 से 115, इश्तिहार वाजिबुल इज़हार 22 मार्च 1886 ई)

तब्लीग़ रिसालत में आप ने यह वर्णन फ़रमाया। अत: जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि कोई मामूली रूह नहीं मांगी गई थी बल्कि एक निशान मांगा गया था जिसके जवाब में अल्लाह तआला ने बहुत सी विशेषताओं पर आधारित बेटे के जन्म की ख़बर दी। एक ऐसे बरकते वाले बेटे की ख़बर दी गई जो उम्र पाने वाला होगा। निहायत ज़की और फ़हीम होगा। साहिब-ए-शिको सम्मान और दौलत वाला होगा। कौमें इस से बरकत पाएँगी। वह ज़ाहरी तथा बातनी उलूम से परिपूर्ण किया जाएगा। कलामुल्लाह अर्थात क़ुरआन करीम का निहायत गहरा ज्ञान उस को प्रदान होगा और इस ख़ुदादाद फ़हम से काम लेकर वह क़ुरआन की ऐसी अज़ीमुश्शान ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाएगा कि कलामुल्लाह का सम्मान दुनिया पर ज़ाहिर हो। वह कैदियों की रिहाई का कारण होगा। वह आलम कबाब होगा अर्थात उस के दौरे हयात में इस तरह विश्वव्यापी तबाहियां आऐंगी जो सब दुनिया को भून कर रख देंगी। वह ज़मीन के किनारों तक शुहरत पाएगा।"

(सवानेह फ़ज़ले उमर ,जिल्द 1 पृष्ठ 53 से 54)

अब हम देखते हैं कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो के ज़माने में ऐसी व्यापी तबाहिया जंगों की सूरत में भी आईं। दो जंगें विश्वव्यापि जंगें हुईं और आफ़ात के रूप में भी आईं। फिर शुहरत पाने का जहां तक सम्बन्ध है आपने अपनी ज़िंदगी में नए मिशन और तब्लीग़ी काम कर के दुनिया के विभिन्न देशों में इस्लाम का पैग़ाम पहुंचा कर ज़मीन के किनारों तक शुहरत भी पाई बल्कि इस पेशगोई के हवाले से हम देखते हैं कि यह सिलसिला आज भी जारी है। अब मैं इस समय हज़रत मुस्लेह मौऊद की सवानेह और सीरत के हवाले से जैसा कि मैंने कहा कुछ बातें प्रस्तुत करूँगा।

जहां तक आपकी शिक्षा का सम्बन्ध है। सादा क़ुरआन करीम पढ़ने के बाद आपको बाक़ायदा स्कूल में दाख़िल हो कर जो प्रचलित शिक्षा थी, प्रचलित दुनियावी शिक्षा पाने का मौक़ा मिला और उसकी भी यह हालत थी कि घर पर भी उस्तादों से उर्दू और अंग्रेज़ी की शिक्षा हासिल की। इस बारे में हज़रत पीर मंज़ूर मुहम्मद साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो कुछ समय आपको उर्दू पढ़ाते रहे। अत: जो उस्ताद मुक़र्रर हुए घर में शिक्षा देने के लिए उन में पीर मन्ज़ूर मुहम्मद साहिब थे जिन्होंने आपको कुछ समय उर्दू पढ़ाई। इस के बाद कुछ समय मौलवी शेर अली साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने आपको अंग्रेज़ी पढ़ाई लेकिन यह सब शिक्षा किस माहौल और किस एहतिमाम के साथ हुई हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे ने जब फ़ज़ल उम्र की सवानेह लिखी तो आप लिखते हैं "यह भी एक दिलचस्प दास्तान है जो ख़ुद हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब ही के शब्दों में सुनने से सम्बन्ध रखती है। शिक्षा का जैसा कि मैंने कहा क्या हाल था? वह हम हज़रत मुस्लेह मौऊद की ज़बानी सुनते हैं। आप फ़रमाते हैं कि मेरी शिक्षा के सिलसिला में मुझ पर सबसे ज़्यादा एहसान हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह अन्हो का है। आप चूँकि हकीम भी थे और इस बात को जानते थे कि मेरी सेहत इस क़ाबिल नहीं कि मैं किताब की तरफ़ ज़्यादा देर तक देख सकों। इसलिए आप का तरीक़ा यह था कि आप मुझे अपने पास बिठा लेते और फ़रमाते मियां मैं पढ़ता जाता हूँ तुम सुनते जाओ। इस की वजह यह थी कि बचपन में मेरी आँखों में सख़्त कुकरे पड़ गए थे (आँखों की बीमारी थी) और निरन्तर तीन चार साल तक मेरी आँखें दुखती रहीं और ऐसी बड़ी तकलीफ़ कुकरों की वजह से पैदा हो गई कि डाक्टरों ने कहा कि इस की देखने की शक्ति नष्ट हो जाएगी। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मेरी सेहत के लिए खासतौर पर दुआएं करनी शुरू कर दीं और साथ ही आप ने रोज़े रखने शुरू कर दिए। मुझे इस समय याद नहीं।" आप फ़रमाते हैं "मुझे इस समय याद नहीं कि आप ने कितने रोज़े रखे बहरहाल तीन या सात रोज़े आप ने रखे। जब आख़री रोज़े की आप इफ़तारी करने लगे और रोज़ा खोलने के लिए मुँह में कोई चीज़ डाली तो अचानक मैंने आँखें खोल दीं और मैंने आवाज़ दी कि मुझे नज़र आने लग गया है। लेकिन इस बीमारी की शिद्दत और इस के निरन्तर हमलों का नतीजा यह हुआ कि मेरी एक आँख की रोशनी नष्ट हो गई। अत: मेरी बाईं आँख में रोशनी नहीं है। मैं रास्ता तो देख सकता हूँ मगर किताब नहीं पढ़ सकता। दो-चार फुट पर अगर कोई ऐसा आदमी बैठा हो जो मेरा पहचाना हुआ हो तो मैं उस को देखकर पहचान सकता हूँ। लेकिन अगर कोई बिना पहचान वाला बैठा हो तो मुझे उस की शक्ल नज़र नहीं आ सकती। सिर्फ दाईं आँख काम करती है मगर इस में भी कुकरे पड़ गए और वे ऐसे अधिक हो गए कि कई कई रातें में जाग कर काटा करता था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मेरे उस्तादों से कह दिया कि पढ़ाई उस की मर्ज़ी पर होगी। यह जितना पढ़ना चाहे पढ़े और अगर ना पढ़े तो इस पर ज़ोर ना दिया जाए क्योंकि उस की सेहत इस क़ाबिल नहीं कि यह पढ़ाई का बोझ बर्दाश्त कर सके। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बार बार मुझे सिर्फ यही फ़रमाते कि तुम क़ुरआन का तर्जुमा और बुख़ारी हज़रत मौलवी साहिब से पढ़ लो (अर्थात हज़रत मौलाना नूरुद्दीन ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल से पढ़ लो।) उस के इलावा आप ने यह भी फ़रमाया था कि कुछ तिब्ब भी पढ़ लूं क्योंकि यह हमारा ख़ानदानी फ़न है। आप फ़रमाते हैं कि मास्टर फ़क़ीरुल्लाह साहिब ..हमारे हिसाब के उस्ताद थे (स्कूल में) और लड़कों को समझाने के लिए बोर्ड पर सवाल हल किया करते थे लेकिन मुझे अपनी नज़र की कमज़ोरी की वजह से वे दिखाई नहीं देते थे। क्योंकि जितनी दूर बोर्ड था इतनी दूर तक मेरी आंखों की रोशनी काम नहीं दे सकती थी। फिर ज़्यादा देर तक में बोर्ड की तरफ़ यूं भी नहीं देख सकता था क्योंकि नज़र थक जाती थी। इस वजह से मैं क्लास में बैठना फ़ुज़ूल समझा करता था। कभी जी चाहता तो चला जाता और कभी ना जाता। मास्टर फ़क़ीरुल्लाह साहिब ने एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास मेरे बारे में शिकायत की कि हुज़ूर यह कुछ नहीं पढ़ता। कभी स्कूल में आ जाता है, और कभी नहीं आता। मुझे याद है आप लिखते हैं कि मुझे याद है कि जब मास्टर साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के पास यह शिकायत की तो मैं डर के मारे छुप गया कि मालूम नहीं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कितना नाराज़ हूँ। लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब ये बात सुनी तो आप ने फ़रमाया कि आपकी बड़ी मास्टर साहिब को कहा कि आपकी बड़ी मेहरबानी है जो आप बच्चे का ख़्याल रखते हैं और मुझे आपकी बात सुनकर बड़ी ख़ुशी हुई कि यह कभी कभी मदरसे चला जाता है। (यह तो बड़ी अच्छी बात है कि कभी कभी चला जाता है) वर्ना मेरे नज़दीक तो इस की सेहत इस क़ाबिल नहीं कि पढ़ाई कर सके। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हंसकर फ़रमाया कि इस से हम ने कोई आटे दाल की दुकान थोड़ी खुलवानी है कि इसे हिसाब सिखाया जाए। हिसाब उसे आए या ना आए कोई बात नहीं। फिर फ़रमाया कि आख़िर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम या आप के सहाबा ने कौन सा हिसाब सीखा था। अगर यह मदरसा में चला जाए तो अच्छी बात है वर्ना उसे मजबूर नहीं करना चाहीए। यह सुनकर मास्टर साहिब वापस आ गए। मैंने इस नर्मी से और भी फ़ायदा उठाना शुरू कर दिया और फिर मदरसे में जाना ही छोड़ दिया। कभी महीने में एक-दो बार चला जाता तो और बात थी। अत: इस रंग में मेरी शिक्षा हुई और मैं वास्तव मजबूर भी था क्योंकि बचपन में आँखों की तकलीफ़ के अतिरिक्त मुझे जिगर की ख़राबी की भी बीमारी था। छ: छ: महीने मूंग की दाल का पानी या साग का पानी मुझे दिया जाता रहा, (जिगर के ईलाज के लिए)। फिर उस के साथ तिल्ली भी बढ़ गई थी। रैड आइयो डाविड आफ़ मरकरी (Red Iodide of Mercury) की तिल्ली के स्थान पर मालिश की जाती थी। इसी तरह गले पर भी इस की मालिश की जाती क्योंकि मुझे ख़नाज़ीर की भी शिकायत थी। (टांसल्ज़ की शिकायत थी) अत: आँखों में कुकरे, जिगर की

ख़राबी, अज़म तहाल की शिकायत (अर्थात तिल्ली की बीमारी) और फिर उस के साथ बुख़ार का शुरू हो जाना जो छः छः महीने तक ना उतरता और मेरी पढ़ाई के बारे में बुज़ुर्गों का फ़ैसला कर देना कि यह जितना पढ़ना चाहे पढ़ ले इस पर ज़्यादा ज़ोर ना दिया जाए इन हालात से हर आदमी अंदाज़ा लगा सकता है कि मेरी शिक्षा की क़ाबिलीयत का क्या हाल होगा।

फ़रमाते हैं "एक बार हमारे नाना-जान हज़रत मीर नासिर नवाब साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो ने मेरा उर्दू का इमतिहान लिया।" हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं कि "मैं अब भी बहुत बुरी लिखाई वाला हूँ।" (अर्थात मेरी लिखाई अच्छी नहीं है।) "मगर उस ज़माना में तो मेरी इतनी बुरी लिखाई थी कि पढ़ा ही नहीं जाता था कि मैंने क्या लिखा है। उन्होंने बड़ी कोशिश की कि पता लगाऐं कि मैंने क्या लिखा है मगर उन्हें कुछ पता ना चला।" आप लिखते हैं मेरे बच्चों में से अक्सर की लिखाई मुझ से अच्छे हैं। मेरे लिखाई का नमूना सिर्फ मेरी लड़की, (अपनी एक लड़की की मिसाल देते हैं) अमतुल रशीद की लिखाई में पाया जाता है। इस का लिखा हुआ ऐसा होता है कि हमने उस के लिखे हुए पर एक रुपया इनाम मुक़र्रर कर दिया था कि अगर ख़ुद अमतुल रशीद भी पढ़ कर बता दे कि उसने क्या लिखा है तो एक रुपया इनाम दिया जाएगा। फ़रमाते हैं कि यही हालत उस समय मेरी थी कि मुझ से कई बार अपना लिखा हुआ भी पढ़ा नहीं जाता था। कहते हैं जब मीर साहिब ने पर्चा देखा तो वह जोश में आ गए और कहने लगे कि यह तो ऐसा है जैसे लंडे लिखे होते हैं। उनकी तबीयत बड़ी तेज़ थी। ग़ुस्से में शीघ्र हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास पहुंचे। मैं भी संयोग से उस समय घर में ही था। हम तो पहले ही उनकी तबीयत से डरा करते थे। (बड़े ग़ुस्से वाली मीर साहिब की तबीयत थी।) जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास शिकायत लेकर पहुंचे तो और भी डर पैदा हुआ कि अब पता नहीं क्या होगा। फ़रमाते हैं कि ख़ैर मीर साहिब आ गए और हज़रत साहिब से कहने लगे कि महमूद की शिक्षा की तरफ़ आप को ज़रा भी तवज्जा नहीं। मैंने उस का उर्दू का इमतिहान लिया था। आप ज़रा पर्चा तो देखें उस की इतनी बुरी लिखाई है कि कोई भी यह ख़त नहीं पढ़ सकता। फिर उसी जोश की हालत में वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कहने लगे कि आप बिलकुल पर्वा नहीं करते और लड़के की उम्र बर्बाद हो रही है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब मीर साहिब को इस तरह जोश की हालत में देखा तो फ़रमाया बुलाओ हज़रत मौलवी-साहिब को। आप फ़रमाते हैं जब हज़रत मसीह मौऊद को कोई मुश्किल आती तो हमेशा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह तआला अन्हो को बुला लिया करते थे। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल को मुझ से बड़ी मुहब्बत थी। आप तशरीफ़ लाए और आदत के अनुसार सिर नीचे डाल कर एक तरफ़ खड़े हो गए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मौलवी-साहिब ! मैंने आपको इस उद्देश्य के लिए बुलाया है कि मीर साहिब कहते हैं कि महमूद का लिखा हुआ पढ़ा नहीं जाता। मेरा जी चाहता है कि इस का इमतिहान ले लिया जाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं समझता हूँ कि इस का इमतिहान ले लिया जाए। यह कहते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़लम उठाई और दो तीन पंक्तियों में एक इबारत लिख कर मुझे दी और फ़रमाया इस को नक़ल करो। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं बस यह इमतिहान था जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिया। मैंने बड़ी एहतियात से और सोच समझ कर उस को नक़ल कर दिया। अव्वल तो वह इबारत कोई ज़्यादा लंबी नहीं थी। दूसरे मैंने सिर्फ नक़ल करना था और नक़ल करने में तो और भी आसानी होती है क्योंकि असल चीज़ सामने होती है फिर मैंने आहिस्ता-आहिस्ता नक़ल किया। अलिफ़ और बे इत्यादि ध्यान से डाले। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस को देखा तो फ़रमाने लगे मुझे तो मीर साहिब की बात से बड़ा फ़िक्र पैदा हो गया था मगर इस की लिखाई तो मेरे ख़त के साथ मिलती-जुलती है। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल पहले ही मेरी तारीफ़ में उधार खाए बैठे थे फ़रमाने लगे हुज़ूर! मीर साहिब को तो यूंही जोश आ गया है वर्ना इस का ख़त तो बड़ा अच्छा है।

हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल हमेशा मुझे फ़रमाया करते थे कि मियां तुम्हारी सेहत ऐसी नहीं कि तुम ख़ुद पढ़ सको। मेरे पास आ जाया करो में पढ़ता जाऊँगा और तुम सुनते रहा करो। अतः उन्होंने ज़ोर दे देकर पहले क़ुरआन पढ़ाया और फिर बुख़ारी पढ़ा दी। यह नहीं कि आप ने आहिस्ता-आहिस्ता मुझे क़ुरआन पढ़ाया हो बल्कि आप का तरीक़ यह था कि आप क़ुरआन पढ़ते जाते और साथ साथ उस का तर्जुमा करते जाते। कोई बात ज़रूरी समझते तो बता देते वर्ना जल्दी जल्दी पढ़ाते जाते। आप ने तीन महीने में मुझे सारा क़ुरआन पढ़ा दिया था। इसके बाद कुछ छुट्टियां होने लगीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल ने फिर मुझ से कहा कि मियां मुझ से बुख़ारी तो पूरी पढ़ लू। दरअसल मैंने आप को बता दिया था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मुझे फ़रमाया करते थे कि मौलवी-साहिब से क़ुरआन और बुख़ारी पढ़ लो। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी में ही मैंने आप से क़ुरआन और बुख़ारी पढ़नी शुरू कर दी यद्यपि छुट्टियां होती रहीं। इसी तरह तिब्ब भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हिदायत के अधीन मैंने आप से शुरू कर दी थी। तिब्ब का पाठ मैंने और मीर इसहाक़ साहिब ने एक ही दिन शुरू किया था। फिर रज़ि फ़रमाते हैं कि मीर साहिब का एक लतीफ़ा है जो हमारे घर में ख़ूब मशहूर हुआ कि दूसरे ही दिन, (जब पहले दिन का सबक़ दोनों ने ले लिया तो दूसरे दिन) मीर मुहम्मद इसहाक़ साहिब आपनी माता से कहने लगे कि अम्माँ-जान मुझे सुबह जल्दी जगा दें क्योंकि मौलवी साहिब तो देर से मतब (हस्पताल) में आते हैं। मैं पहले मतब में चला जाऊँगा ताकि मरीज़ों को नुस्ख़े लिख कर दूं हालाँकि अभी एक ही दिन उनको तिब्ब शुरू किए हुए हुआ था।

अतः मैंने आप से तिब्ब भी पढ़ी और क़ुरआन करीम की तफ़सीर भी। क़ुरआन करीम की तफ़सीर आप ने दो महीने में ख़त्म करा दी। आप मुझे अपने पास बिठा लेते और कभी आधा और कभी पूरा पारा तर्जुमा से पढ़ कर सुना देते। किसी किसी आयत की तफ़सीर भी कर देते। इसी तरह बुख़ारी आप ने दो तीन महीने में मुझे ख़त्म करा दी। एक बार रमज़ान के महीने में आप ने सारे क़ुरआन का दर्स दिया तो इस में भी मैं शरीक हो गया। कुछ अरबी के रिसाले भी मुझे आप से पढ़ने का इत्तिफ़ाक़ हुआ। अतः यह मेरी इलमीयत थी। मगर उन्हीं दिनों में जब ये कोर्स ख़त्म कर रहा था मुझे अल्लाह तआला ने एक रोया दिखाई जो आपके इलम में तरक़्क़ी के बारे में थी।

(उद्धरित सवानेह फ़ज़ल उमर ,जिल्द 1 ,पृष्ठ 104 से 109)

अतः हम देखते हैं कि ये है आप की इलमी हालत, जिस तरह ज्ञान हासिल किया लेकिन आप की तक़ारीर, आप के ख़िताब, आप की तसानीफ़, आप की क़ुरआन की तफ़सीर इस बात की गवाह हैं कि ख़ुदा तआला ने आप को पढ़ाया। यक़ीनन ये बहुत बड़ा सबूत है और पेशगोई की सच्चाई है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी में जो 1906 ई का जलसा सालाना हुआ इस में आप ने पहली पब्लिक तक़रीर की। इस तक़रीर के इलम तथा मार्फ़त का सुनने वालो पर जो असर हुआ और जो उनकी अवस्था थी उस का कुछ अंदाज़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जलीलुल क़दर सहाबी और क़ादिरुल कलाम शायर हज़रत क़ाज़ी मुहम्मद ज़हूर-रुद्दीन अकमल साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के इन शब्दों से हो सकता है। आप फ़रमाते हैं बुरज-ए-नबुव्वत का रोशन सितारा, ओज-ए-रिसालत का दरख़शिंदा गौहर महमूद सलमा हुल्लाह शिर्क पर तक़रीर करने के लिए खड़ा हुआ। मैं उनकी तक़रीर ख़ास ध्यान से सुनता रहा। क्या बताऊं फ़साहत का एक सेलाब था जो पूरे ज़ोर से बह रहा था। वास्तव में इतनी छोटी सी उम्र में विचारों की पुख़्तगी चमत्कार से कम नहीं। मेरे ख़्याल में यह भी हुज़ूर अलैहिस्सलाम की सदाक़त का एक निशान है और इसी से ज़ाहिर हो सकता है कि मसीहीयत मआब की तर्बीयत का जौहर किस दर्जा कमाल पर पहुंचा हुआ है। आप ने रुहानी कमालात पर अजीब तर्ज़ से बहस की।

(अलहकम, 10 जनवरी 1907 ई,जुबली नंबर 1939 ई)(उद्धिरत सवानेह फ़ज़ल उमर ,जिल्द 1, पृष्ठ 121 से 122)

इस ज़माने में धार्मिक सरगर्मीयां और जोश और ज़हनी तथा रुहानी तरक्की ये बता रही थी कि पेशगोई के शब्द कि वह जल्द जल्द बढ़ेगा के मिस्दाक़ बनने वाले आप ही हैं। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इसी धार्मिक जोश को महसूस फ़रमाया। अतः आप ने एक मौक़ा पर फ़रमाया कि मियां महमूद में इस क़दर धार्मिक जोश पाया जाता है कि मैं कई बार उन के लिए खासतौर पर दुआ करता हूँ।

(तारीख़ अहमदियत ,जिल्द 4 ,पृष्ठ 26)

यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्द हैं। यक़ीनन यह दुआ इसलिए हुई और यही करते होंगे कि अल्लाह तआला उसे वही बेटा बना दे जिसकी ख़बर दी गई थी और इस पर अपने फ़ज़लों की बारिश को तेज़ से तेज़ कर दे और सारी ख़ुशख़बरीयाँ उस के हक़ में हों।

हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब ने जो सीरत लिखी है इस में एक जगह आप ख़लीफ़तुल मसीह राबे लिखते हैं कि प्रथम ख़िलाफ़त के आरम्भ में हज़रत साहिबज़ादा साहिब की उम्र 19 साल की थी और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह अन्हो के विसाल के समय आप अपनी उम्र के 26 वें साल में दाख़िल हो चुके थे। इस नौजवानी में आप की तक़रीर तथा तहरीर का जो रंग था उस के कुछ नमूने, कहते हैं मैं प्रस्तुत करता हूँ। आपके ख़्यालात और विचारों में एक बुज़ुर्ग मुफ़क्किर जैसी दृढ़ता आ चुकी थी। आप के शब्द असर और जज़ब और ख़ुलूस और गुदाज़ में गूँधे हुए थे। कलाम बनावट से पवित्र था और तहरीर दिखावे से पाक थी। तक़रीर में एक कुदरती रवानी थी और तहरीर सलासत का एक बहता हुआ दरिया

थी। दोनों ही कुरान के उलूम और इर्फ़ान के पानी से भरे हुए और दिल तथा दिमाग़ को एक साथ सेराब करते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद 19 साल की उम्र में आप ने जो पहली तक़रीर की इस के बारे में एक साहबे इल्मो फ़ज़ल बुज़ुर्ग हज़रत मौलवी शेर अली साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि एक और घटना जिसका मैं इस मज़मून में ज़िक्र करना चाहता हूँ वह हुज़ूर रज़ी अल्लाह अन्हो की पहली तक़रीर है। अर्थात (मौलवी साहिब के ज़माने में तो ज़िंदा थे) हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी की पहली तक़रीर है जो हुज़ूर ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद पहले सालाना जलसा के मौक़ा पर की। ये जलसा मदरस्सा अहमदिया के सेहन में आयोजित हुआ। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह तआला अन्हो हुज़ूर के दाएं तरफ़ स्टेज पर रौनक अफ़रोज़ थे। स्टेज का रुख़ उत्तर की तरफ था। इस तक़रीर के बारे में दो बातें ज़िक्र योग्य हैं। मौलवी शेर अली साहिब लिखते हैं। पहली अजीब बात यह थी कि इस समय आप की आवाज़ और आप की अदा और आप का लहजा और तर्ज़-ए-तक़रीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़ और तर्ज़ तक़रीर से ऐसे शदीद तौर पर समानता पा गया थ कि उस समय सुनने वालों के दिल में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की, जो अभी थोड़ा अरसा ही हुआ था हम से जुदा हुए थे, याद ताज़ा हो गई और सुनने वालों में से बहुत ऐसे थे जिनकी आँखों से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस आवाज़ की वजह से जो उनके मौऊद बेटे के होंठों से इस समय इस तरह पहुंच रही थी जिस तरह ग्रामोफोन से एक नज़रों से ग़ायब इन्सान की आवाज़ पहुँचती है आँसू जारी हो गए और उन आँसू बहाने वालों में एक विनीत भी था। अगर यह कहना दरुस्त है कि इन्सान की रूह दूसरे पर उतरती है तो हम कह सकते हैं कि उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रूह आप पर उतर रही थी और इस बात का ऐलान कर रही थी कि यह है मेरा प्यारा बेटा जो मुझे रहमत के निशान के रूप में दिया गया था और जिसके बारे में यह कहा गया था कि वह हुस्न और एहसान में तेरा नज़ीर होगा।

दूसरी बात जो इस तक़रीर के बारे में ज़िक्र करने योग्य है वह यह है कि जब तक़रीर ख़त्म हो चुकी तो हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने जिनकी सारी उम्र क़ुरआन शरीफ़ पर तदब्बुर करने में व्यतीत हुई थी और क़ुरआन करीम जिनकी रूह की ख़ुराक थी फ़रमाया कि मियां ने बहुत सी आयतों की ऐसी तफ़सीर की है जो मेरे लिए भी नई थी। मौलवी-साहिब लिखते हैं कि यह आप की पहली तक़रीर थी जो आप ने जमाअत के सामने की और इस पहली तक़रीर में क़ुरआन शरीफ़ के वह मआरिफ़, अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद वह मआरिफ़ वर्णन फ़रमाए हैं जिनके बारे में हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह तआला अन्हो जैसे आलिम क़ुरआन ने यह स्वीकार फ़रमाया कि यह उनके लिए भी नए मआरिफ़ हैं। अत: यह मआरिफ़ उस नौजवान को किस ने सिखाए? ये हिक्मत और ये इलम आपको इस जवानी के ज़माना मैं किस ने दिया। इसी ने जो क़ुरआन शरीफ़ में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बारे में फ़रमाता है।

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَيۡنٰهُ حُكۡمًا وَّعِلۡمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجۡزِى الۡمُحۡسِنِيۡنَ

(यूसुफ़:23) और जब वह अपनी मज़बूती की उम्र को पहुंचा तो उसे हमने हिक्मत और इलम प्रदान किया और इसी तरह हम एहसान करने वालों को बदला दिया करते हैं। कहते हैं कि आप ने सिर्फ आम तौर पर दानाई और हिक्मत की बातें वर्णन ना फ़रमाएं बल्कि क़ुरआन शरीफ़ के अछूते मआरिफ़ वर्णन फ़रमाए और अल्लाह तआला क़ुरआन शरीफ़ के बारे फ़रमाता है لَا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الۡمُطَهَّرُوۡنَ (अलवाकिया:80) इस का अनुवाद यह है कि कोई उसे छू नहीं सकता सिवाए पाक किए हुए लोगों के। कहते हैं कि अत: लड़कपन से निकलते ही आपका लोगों के सामने क़ुरआन शरीफ़ के नए और लतीफ़ मआरिफ़ वर्णन फ़रमाना इस बात की एक स्पष्ट शहादत है कि आप ने अपना लड़कपन अल्लाह तआला की ख़ास तर्बीयत में गुज़ारा और आप बचपन में ही नेक लोगों की जमाअत में दाख़िल थे।

(उद्धरित सवानेह फ़ज़ल उमर ,जिल्द 1, पृष्ठ 217 से 219)

आप की सीरत ते बारे में एक ग़ैर जमाअत पत्रकार के विचार है। यह वर्णन करने से पहले उन्होंने पत्रकार के परिचय में लिखा है कि :मार्च 1913 ई में एक ग़ैर अहमदी पत्रकार मुहम्मद असलम साहिब अमृतसर से कादियान आए और कुछ दिन निवास कर के वापस चले गए। उन्होंने जमाअत का निहायत क़रीब से अध्ययन करने के बाद अपने विचार पर विस्तार से वर्णन किए। उसने हज़रत साहिबज़ादा साहिब के बारे में लिखा (हज़रत) साहिबज़ादा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब से भी मिलकर हमें बुहत अधिक प्रसन्नता हुई। साहिबज़ादा साहिब बहुत अधिक चरित्रवान और सादगी-पसंद इन्सान हैं। ख़ुशखुलक़ी के अतिरिक्त परिस्थतियों को समझने वाले भी हैं। अन्य बातों के अतिरिक्त जो बातें साहिबज़ादा साहिब और मेरे बीच हिन्दुस्तान के भविष्य पर हुई उस के बारे में साहिबज़ादा साहिब ने जो राय दुनिया की क़ौमों के वर्तमान तथा इतिहास की घटनाओं के आधार पर ज़ाहिर फ़रमाई वह निहायत ही ज़बरदस्त मुदब्बिराना पहलू लिए हुए थी। यह ख़िलाफ़त से पहले की बात है। 1913 ई का ज़िक्र है। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल के ज़माने की बात है। फिर लिखते हैं कि साहिबज़ादा साहिब ने मुझ से अज़राह-ए-नवाज़िश बहुत कुछ मुख़लिसाना तरीका में यह इच्छा ज़ाहिर फ़रमाई कि मैं कम से कम एक हफ़्ता कादियान में रहूं। यद्यपि कई कारणों से मैं उनके आदेश को न मान सका मगर साहिबज़ादा साहिब की इस बुलंद नज़राना मेहरबानी तथा शफ़क़त का बहुत धन्यवादी हूँ। साहिबज़ादा साहिब की नेकी तक़्वा और उनके विचारों का खुलापन हमेशा याद रहेगी।

(सवानेह फ़ज़ल उमर ,जिल्द 1 ,पृष्ठ 324)

आप की इबादतों के स्तर की बचपन में ही किया हालत थी इस बारे में हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब भी जो आप के बचपन के उस्तादों में से थे अपने विचारों को इन शब्दों में प्रकट करते हैं। फ़रमाते हैं कि चूँकि विनीत ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत 1890 ई के अन्त में कर ली थी और उस समय से हमेशा आने जाने का सिलसिला निरन्तर जारी रहा। मैं हज़रत ऊलुलअज़म मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद.... को उन के बचपन से देख रहा हूँ कि किस तरह हमेशा उनकी आदत लज्जा और शराफ़त तथा सदाक़त और धर्म की तरफ़ ध्यान देने की थी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की धार्मिक कामों में बचपन से ही उनको शौक़ था। नमाज़ों में अक्सर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ जामे मस्जिद में जाते और ख़ुत्बा सुनते। फ़रमाते हैं कि एक बार मुझे याद है जब आप की उम्र 10 साल के क़रीब होगी आप मस्जिद अक्सा में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ नमाज़ में खड़े थे और फिर सिज्दा में बहुत रो रहे थे। बचपन से ही आप को फ़ित्र न अल्लाह के साथ और इस के रसूलों के साथ ख़ास सम्बन्ध मुहब्बत था।

(सवानेह फ़ज़ल उमर , जिल्द 1 ,पृष्ठ 116 से 117)

फिर एक और घटना है आप की खुदा तआला के समक्ष रोने की और सिज्दों में देर तक पड़े रहने की जिससे बड़ों को भी बड़ा ताज्जुब हुआ करता था और ऐसी हालत में जबकि ज़ाहिरी तौर पर बड़ों को यह भी पता हो कि कोई सदमा भी नहीं है ऐसा या फ़िक्र की कोई बात भी नहीं है तो उस समय जब बड़े आपका ख़ुदा तआला के सामने रोना देखते थे तो उनको बड़ा ताज्जुब होता था और सवाल उठता था कि आख़िर इस बच्चे पर क्या बीती है जो रातों को छुप-छुप कर उठता है और बिल्क बिल्क कर अपने रब के हुज़ूर रोता है और अपने मासूम आँसूओं से सिज्दा गाह को गीला कर देता है।

हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब रहमहुल्लाह तआला ने जब सवानेह लिखी तो आप लिखते हैं कि यही आश्चर्य शेख़ ग़ुलाम अहमद साहिब वाइज़ रज़ी अल्लाह अन्हो के दिल में भी पैदा हुआ जो एक नए मुसलमान थे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर इस्लाम में दाख़िल हुए थे और इख़लास और ईमान में ऐसी तरक़्क़ी की कि निहायत आबिद तथा ज़ाहिद और कशफ़ तथा इलहाम वाले बुज़ुर्गों में उनकी गिनती होता है। शेख़ ग़ुलाम अहमद साहिब फ़रमाया करते थे कि एक बार मैंने यह इरादा किया कि आज की रात मस्जिद मुबारक में गुज़ारूँगा और तन्हाई में अपने मौला से जो चाहूँगा माँगूँगा। कहते हैं मगर जब मैं मस्जिद में पहुंचा तो क्या देखता हूँ कि कोई आदमी सिज्दे में पड़ा हुआ है और रो रो कर से दुआ कर रहा है। इस के इस रोने की वजह से मैं नमाज़ भी ना पढ़ सका और इस आदमी की दुआ का असर मुझ पर भी छा गया और में भी दुआ में लीन हो गया और मैंने दुआ की कि हे अल्लाह! यह आदमी तेरे हुज़ूर से जो कुछ भी मांग रहा है वह इस को दे दे और मैं खड़ा खड़ा थक गया कि यह शख़्स सिर उठाए तो मालूम करूँ कि कौन है। फ़रमाते हैं कि मैं नहीं कह सकता कि मुझसे पहले वह कितनी देर से आए हुए थे मगर जब आप ने सिर उठाया तो क्या देखता हूँ कि हज़रत मियां महमूद अहमद साहिब हैं। मैंने अस्सलामो अलैकुम कहा और हाथ मिलाया और पूछा मियां! आज अल्लाह तआला से क्या कुछ ले लिया तो आपने रमाया कि मैंने तो यही मांगा है कि हे मेरे अल्लाह! मुझे मेरी आँखों से इस्लाम को ज़िंदा कर के दिखा और यह कह कर आप अन्दर तशरीफ़ ले गए। इस्लाम की फ़तह का दिन देखने की यह बेक़रार तमन्ना जो इस कम आयु में आप के दिल में थी और आप की कम आयु में ही वह फिर फल भी लाने लगी जब आप को जवानी में ही अल्लाह तआला ने आपको ख़लीफ़ा बनाया।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 4 April 2019 Issue No. 14

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

(उद्धरित सवानेह फ़ज़ल उमर ,जिल्द 1 ,पृष्ठ 151)

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब ने "तशहीज़ुल अज़हान" में अपनी एक दुआ का ज़िक्र किया है जो 1909 ई में आप ने लिखी। इस मज़मून में रमज़ान की बरकतों का ज़िक्र करने के बाद आप ने लिखा कि :

"मैं रिसाला तशहीज़ अज़हान के लिए अपनी मेज़ में से एक मज़मून तलाश कर रहा था कि मुझे एक काग़ज़ मिला जो मेरी एक दुआ थी जो मैंने पिछले रमज़ान में की थी। मुझे इस दुआ के पढ़ने से ज़ोर से तहरीक हुई कि अपने दोस्तों को भी इस तरफ़ ध्यान दिलाऊं। ना जाने किस की दुआ सुनी जाए और ख़ुदा का फ़ज़ल किस समय हमारी जमाअत पर एक ख़ास रंग में नाज़िल हो। मैं अपना दर्द-ए-दिल ज़ाहिर करने के लिए इस दुआ को यहां नक़ल कर देता हूँ कि शायद किसी नेक फ़ितरत के दिल में जोश पैदा हो और वह अपने रब के हुज़ूर में अपने लिए और जमाअत अहमदिया के लिए दुआओं में लग जाए जो कि मेरा असल उद्देश्य है। वह दुआ यह है।

"हे मेरे मालिक मेरे क़ादिर ख़ुदा। मेरे प्यारे मौला मेरे रहनुमा। हे ख़ालिक़ अर्ज़ समा। हे पानी तथा हवा पर कुदरत करने वाले। हे वह ख़ुदा जिस ने आदम से लेकर हज़रत ईसा तक लाखों हिदायत देने वालों और करोड़ों मार्गदर्शकों को दुनिया की हिदायत के लिए भेजा। हे वह अली तथा कबीर जिसने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जैसा अज़ीमुश्शान रसूल मबऊस किया। हे वह रहमान जिसने मसीह जैसे रहनुमा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलामों में पैदा किया। हे नूर के पैदा करने वाले, हे अन्धेरों के मिटाने वाले! तेरे हुज़ूर में, हाँ सिर्फ़ तेरे ही हुज़ूर में मुझ जैसा ज़लील बंदा झुकता और विनय करता है कि मेरी आवाज़ सुन और क़बूल कर क्योंकि तेरे ही वादों ने मुझे साहस दिलाया है कि मैं तेरे आगे कुछ निवेदन करने का साहस करूँ। मैं कुछ ना था तूने मुझे बनाया। मैं अदम (नेस्ती) में था तो मुझे वजूद में लाया। मेरी परवरिश के लिए चारों पदार्थ बनाए और मेरी ख़बर लेने के लिए के लिए इन्सान को पैदा किया जब में अपनी आवश्यकताओं को वर्णन तक ना कर सकता था। तूने मुझ पर वह इन्सान निर्धारत किए जो मेरी फ़िक्र ख़ुद करते थे। फिर मुझे तरक़्क़ी दी और मेरे रिज़्क़ को बड़ा किया। हे मेरी जान! हाँ हे मेरी जान! तू ने आदम को मेरा बाप बनने का हुक्म दिया और हव्वा को मेरी माँ निर्धारित किया। और अपने ग़ुलामों में से एक ग़ुलाम को जो तेरे हुज़ूर इज़्ज़त से देखा जाता था, इस लिए निर्धारित किया कि वह मुझ जैसे नासमझ और नादान और कम ज्ञान वाले इन्सान के लिए तेरे दरबार में सिफ़ारिश करे और तेरे रहम को मेरे लिए हासिल करे। मैं गुनाहगार था तो ने सत्तारी से काम लिया। मैं ग़लती करने वाले था तूने ग़फ़्फ़ारी (क्षमा से) से काम लिया। हर एक तकलीफ़ और दु:ख में मेरा साथ दिया। जब कभी मुझ पर मुसीबत पड़ी तूने मेरी मदद की और जब कभी मैं गुमराह होने लगा तूने मेरा हाथ पकड़ लिया। बावजूद मेरी शरारतों के तूने क्षमा किया। और बावजूद मेरे दूर जाने के तू मेरे क़रीब हुआ। मैं तेरे नाम से ग़ाफ़िल था मगर तूने मुझे याद रखा। इन मौक़ों पर जहां माता पित और प्रिय रिश्तेदार और दुख दूर करने वाले दोस्त मदद से क़ासिर होते हैं तूने अपनी क़ुदरत का हाथ दिखाया और मेरी मदद की। मैं दुखी हुआ तो तूने मुझे ख़ुश किया। मैं परेशान हुआ तो तूने मुझे प्रसन्न किया। मैं रोया तू तूने मुझे हँसाया। कोई होगा जो जुदाई में तड़पता हो, मुझे तो तूने ख़ुद ही चेहरा दिखाया। तो तूने मुझ से वादे किए और पूरे किए और कभी नहीं हुआ कि तुझ से अपने इक़रारों के पूरा करने में कोताही हुई हो। मैंने भी तुझ से वाादे किए और तोड़े मगर तूने इस का कुछ ख़्याल नहीं किया। मैं नहीं देखता कि मुझ से ज़्यादा गुनहगार कोई और भी हो और में नहीं जानता कि मुझ से ज़्यादा मेहरबान तू किसी और गुनहगार पर भी हो। तेरे जैसा शफ़ीक़ वहम तथा गुमान में भी नहीं आ सकता।" अल्लाह तआला को फ़रमाते हैं "तेरे जैसा शफ़ीक़ वहम तथा गुमान में भी नहीं आ सकता। जब मैं तेरे हुज़ूर में आकर गिड़गिड़ाया और रोया तूने मेरी आवाज़ सुनी और क़बूल की। मैं नहीं जानता कि तूने कभी मेरे दर्द भरी दुआ रद्द की हो। अत: हे मेरे ख़ुदा! मैं निहायत दर्दे दिल से और सच्ची तड़प के साथ तेरे हुज़ूर में गिरता और सिजदा करता हूँ और निवेदन करता हूँ कि मेरी दुआ को सुन और मेरी पुकार को पहुंच। हे मेरे क़ुद्दूस ख़ुदा! मेरी क़ौम हलाक हो रही है उसे हलाकत से बचा। अगर वह अहमदी कहलाते हैं तो मुझे उनसे क्या सम्बन्ध जब तक उनके दिल और सीने साफ़ ना हूँ और वह तेरी मुहब्बत

पृष्ठ 1 का शेष

काम करते हैं। दिल का सैक़ल (सफाई) यहां तक होनी चाहिए कि इस में से भी मुँह नज़र आ जाए। मुँह का नज़र आना किया है? तख़ल्लक़ो बिअख़लाक़िल्लाह का मिस्दाक़ होना। सालिक का दिल आईना है जिसको मुसीबतों से इतना साफ कर देते हैं कि नबी के अख़लाक़ इस में प्रकट होने लग जाते हैं और यह उस वक़्त होता है जब बहुत कोशिशों और पवित्रता के बाद उस के अंदर किसी किस्म की गन्दगी या अपवित्रता ना रहे तब यह दर्जा नसीब होता है। हर एक मोमिन को एक हद तक ऐसी सफ़ाई की ज़रूरत है। कोई मोमिन बिना सफाई के नजात ना पाएगा। सुलूक वाला ख़ुद यह सफाई करता है, अपने काम से मुसीबत उठाता है ,लेकिन जज़्ब वाला मुसाबतों में डाला जाता है। ख़ुदा ख़ुद उस की सफाई करने वाला होता है और तरह-तरह की मुसीबतों से सफाई कर के इस को आईना का दर्जा प्रदान कर देता है। दरअसल सालिक तथा मजज़ोब दोनों का एक ही नतीजा है अत: मुत्तक़ी के दो हिस्से हैं । सुलूक तथा जज़ब।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 16 से 18)

☆ ☆ ☆

में डूबे ना हों। मुझे उनसे क्या ग़रज़? अत: हे मेरे रब! अपने रहमानियत और रहीमीत के गुणों को जोश में ला। और उनको पाक कर दे। सहाबा जैसा जोश उनमें पैदा हो। और वे तेरे धर्म के लिए बेक़रार हो जाऐं उनके कर्म उनके कथन से ज़्यादा उम्दा और साफ़ हूँ। वे तेरे प्यारे चेहरा पर क़ुर्बान हों और नबी करीम पर फ़िदा। तेरे मसीह की दुआएं उनके हक़ में क़बूल हूँ और उस की पाक और सच्ची शिक्षा उनके दिलों में घर कर जाए। हे मेरे ख़ुदा! मेरी क़ौम को सारे इबतिलाओं और दुखों से बचा और विभिन्न प्रकार की मुसीबतों से उन्हें सुरक्षित रख। उनमें बड़े बड़े बुज़ुर्ग पैदा कर। यह एक क़ौम हो जाए जो तूने पसंद कर ली हो। और यह एक गिरोह हो जिसको तू ..... अपने लिए विशेष कर ले। शैतान के कब्ज़ा से महफ़ूज़ रहें और हमेशा फरिश्तों का नुज़ूल उन पर होता रहे। इस क़ौम को दीन तथा दुनिया में मुबारक कर, मुबारक कर। आमीन सुम्मा आमीन या रबल अलालमीन।

(सवानह फ़ज़ल उमर ,जिल्द 1 ,पृष्ठ 309 से 312)

यह दुआ जैसा कि मैंने कहा 1909 ई की है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की ख़िलाफ़त के समय में जबकि आप की उम्र सिर्फ 20 साल थी, उस समय भी आप के दिल में धर्म के लिए और क़ौम के लिए एक दर्द था। अल्लाह तआला हज़ारों हज़ार रहमतें नाज़िल फ़रमाए आप की रूह पर जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म को फैलाने और आप के सच्चे ग़ुलाम और मसीह मौऊद और महदी माहूद के मक़सद को पूरा करने के लिए रात-दिन एक कर के और अपने अहद को पूरा कर के अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर हुई और हमें आपकी इस दर्द-भरी दुआ को समझने और करने और अहमदी होने के मक़सद को पूरा करने की अल्लाह तआला तौफ़ीक़ फ़रमाए।

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 04-10 जनवरी 2019 ई पृष्ठ 5-8)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad